Delhi Postal Regd. No. DL © -01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

भिक्षु वाणी

नांणो ने सांतरों, एकण नोली मांय।
ते भोला रे हाथे दियां, त्यांसूं जुआ किया किम जाय।

खोटा और खरा सिक्का एक ही नोली में है। क्या भोला आदमी उन्हें अलग-अलग कर सकता है?

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 48 • 4 सितम्बर - 10 सितम्बर, 2023 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-09-2023 • पेज: 12 • ₹10

अपने संदेशों से राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण कर रहे हैं आचार्यश्री महाश्रमण – रमेश बैस, राज्यपाल, महाराष्ट्र

तेरांपथ प्रोफेशनल फोरम बुद्धिमानों का संगठन : आचार्यश्री महाश्रमण

अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए महामहिम राज्यपाल रमेश बैस

नन्दनवन, मुम्बई
२६ अगस्त २०२३

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के १६वें राष्ट्रीय अधिवेशन के द्वितीय दिवस पर मंचीय उपक्रम आयोजित हुआ। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अधिवेशन में उपस्थित सम्भागियों को आशीर्वचन देते हुए फरमाया कि तेरांपथ प्रोफेशनल फोरम बुद्धिमानों का संगठन है। बुद्धिमान आदमी बहुत बढ़िया कार्य कर समस्या को सुलझा सकता है तो कहीं बुद्धि का ठीक उपयोग नहीं करने से समस्या पैदा करने का प्रयास हो सकता है। आदमी लघुता का प्रयोग करें। घमंड से बचने वाला उत्थान कर सकता है। हल्की चीज ऊपर उठती है। हम अपने जीवन में दुर्गुणों से हल्के बनें। लघुता दुर्गुणों में आए। वार्षिक सम्मेलन में सभी का मिलना धार्मिकता के साथ बढ़ता रहे। धर्म की छोटी-छोटी जानकारी के साथ करणीय कार्य को आचरण में लाएं तो धार्मिकता भी अच्छी हो जाती है।

महातपस्वी युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुख्य प्रवचन में मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्न किया गया है- भन्ते! यह लोक क्या है? उत्तर दिया कि लोक और अलोक दो है। स्थूल दूनिया तो लोक ही है। अनन्त आकाश में छोटा-सा स्थान लोक का है। पांच अस्तिकाय हैं, बस यही लोक है। धर्मास्तिकाय, अधर्मा- स्तिकाय, आकाशास्तिकाय, जीवास्तिकाय और पुद्गलास्तिकाय, ये जहां है, वही लोक है। प्रथम चारों अमूर्त है, सिर्फ पुद्गला-स्तिकाय मूर्त है। अलोक में तो केवल आकाश तत्व है। जैन दर्शन का एक वाद है- पंचास्तिकाय। सृष्टि में दो ही तत्त्व हैं- जीव और अजीव।

जैन दर्शन में नव तत्व और पांच अस्तिकाय बताये गये हैं। अनेक संदर्भों से अलग-अलग बातें बतायी जा सकती हैं। बढ़िया उत्तरदाता वह है जो प्रश्नकर्ता का अन्तर छू ले। जहां आत्मा के कल्याण की बातें है, वहां नव तत्वों को समझना आवश्यक है। ये अध्यात्म धर्म से जुड़े हैं।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास के क्रम में पूज्य कालूगणी द्वारा सन्तों को शिक्षा-प्रेरणा देने के प्रसंग को फरमाया।

साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी ने मंगल पाथेय में 'लघुता से प्रभुता' विषय व्याख्या करते हुए जीवन नदी के दो छोर बताये - एक पहलु है लघुता और दूसरा है प्रभुता। आध्यात्मिक जगत में प्रभुता का अर्थ है कि हमें संपन्न बनना है, ऐश्वर्य संपन्न बनना है, लेकिन ऐश्वर्य कौनसा होगा? रूपये-पैसे का नहीं, प्रोपर्टी का नहीं, हमारा आध्यात्मिक ऐश्वर्य है हम अपनी आत्मा की ओर चले जाते हैं। जिन व्यक्तियों का दृष्टिकोण आध्यात्मिक बन जाता है, अन्तर्मुखी बन जाते हैं, वह वास्तव में आध्यात्मिक समृद्धि को प्राप्त कर लेते हैं। हल्का बनना चाहते हो तो अपनी इच्छाओं को अल्प करना होगा। जितनी व्यक्ति की इच्छाएं अल्प होंगी, वह उतना ही आगे बढ़ सकता है।

राष्ट्रीय अधिवेशन में महाराष्ट्र शासन के महामहिम राज्यपाल श्री रमेश बैस के आगमन पर उन्हें पुलिसकर्मियों द्वारा 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया गया। साथ ही राष्ट्र गान और महाराष्ट्र गान का संगान किया गया।

मंचीय कार्यक्रम में टीपीएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल ने अपने विचार रखते हुए कहा कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तभी लघुत्व से प्रभुत्व प्राप्त कर सकता है, जब उसके जीवन में आध्यात्मिक वरदहस्त हो।

शेष पृष्ठ ११ पर...

जैन विद्या परीक्षा ज्ञान संवर्धन का माध्यम : आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि में समण संस्कृति संकाय के २३वें दीक्षान्त समारोह का भव्य आयोजन

नन्दनवन-मुम्बई
२४ अगस्त २०२३

जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में पूज्य सन्निधि में समण संस्कृति संकाय का त्रिदिवसीय २३वां दीक्षांत समारोह समायोजित हुआ।

परमपूज्य आचार्यश्री ने उपस्थित संभागीगण को पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि स्वाध्याय के द्वारा कर्म की निर्जरा भी होती है और चित्त की निर्मलता का विकास भी हो सकता है। जैन विश्व भारती के अंतर्गत समण संस्कृति संकाय जैन विद्या का अच्छा ज्ञान कराने वाला है। आगम मंथन प्रतियोगिता स्वाध्याय का अच्छा माध्यम है। जैन विद्या परीक्षा ज्ञान संवर्धन का माध्यम है। इसके द्वारा लोग अपने ज्ञान का संवर्धन करें। तेरापंथी के साथ-साथ अन्य जैन लोग भी जैन विद्या का अध्ययन करें तो अच्छा लाभ मिल सकता है। जैन विश्व भारती और अधिक धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करती रहे। आचार्यश्री से आशीष प्राप्त कर सभी संभागी प्रफुल्लित नजर आ रहे थे।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भगवती सूत्र के बारहवें शतक के दसवें उद्देशक की विवेचना कराते हुए फरमाया कि प्रश्न किया गया है कि आत्मा कितने प्रकार की प्रज्ञप्त है? उतर दिया गया कि अध्यात्म जगत में आत्मा एक मौलिक तत्त्व है। आत्मा है तो यह अध्यात्म का जगत टिका हुआ है। आत्मवाद धर्म जगत का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। आत्मा और शरीर को अलग-अलग माना गया है। आत्मा के आठ प्रकार प्रज्ञप्त हैं। द्रव्य आत्मा, कषाय आत्मा, योग आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा, दर्शन आत्मा, चारित्र आत्मा और वीर्य आत्मा। इनमें मूल तो द्रव्य आत्मा है, जो असंख्य प्रदेशों का पिंड है। द्रव्य आत्मा तो सिद्ध हो या संसारी सभी में होती है। द्रव्य आत्मा ही अन्य सात आत्माओं का आधार है। गुण और पर्याय रहने का स्थान द्रव्य आत्मा ही है।

द्रव्य और भाव का अनेक संदर्भों में प्रयोग किया जाता है। द्रव्य आत्मा के सिवाय शेष सात आत्माएं पर्याय है। द्रव्य आत्मा पाप को ग्रहण नहीं करती, भाव आत्मा ही पाप का ग्रहण कर सकती है। जिसमें कषाय है, वह कषाय आत्मा है। यह दसवें गुणस्थान तक होती है। मन, वचन, काया की प्रवृत्ति कराने वाला जो व्यापार है, वो योग आत्मा है। तेरहवें गुणस्थान तक योग आत्मा है।

चैतन्य क्रिया में प्रवृत्त जीव है, वह जो व्यापार है, वह उपयोग आत्मा है। उपयोग आत्मा हर जीव में होती है। सिद्धों में भी उपयोग आत्मा होती है। द्रव्य आत्मा है तो उपयोग आत्मा तो होगी ही। सम्यक् दर्शन युक्त जीव में ही ज्ञान आत्मा होती है। जिन जीवों में मिथ्यात्व है, उनमें ज्ञान आत्मा नहीं हो सकती। दर्शन आत्मा सब जीवों में होती है। चारित्र आत्मा सावद्य प्रवृत्ति से निवृत्त, व्रत सम्पन्न साधु में होती है। सिद्धों में चारित्र आत्मा नहीं होती। गृहस्थ श्रमणोपासक, आंशिक रूप में देशतः चारित्र आत्मा हो सकती है।

उत्थान-बल आदि की शक्ति है, वह वीर्य आत्मा होती है। यह आत्मा सिर्फ संसारी जीवों में ही होती है। कारण वीर्य आत्मा शरीर के बिना नहीं हो सकती।

शेष पृष्ठ ८ पर...

आदमी में यह साहस होना चाहिए कि जो कहना है वह सामने ही कहूंगा, उसी को कहूंगा जिससे संबंधित बात है। सही बात कहूंगा और हित की बात करूंगा। -आचार्यश्री महाश्रमण

अच्छा कर्म करने का करें प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

कालूयशोविलास की सुविवेचना कराते हुए आचार्यश्री महाश्रमण

२२ अगस्त २०२३
नन्दनवन-मुम्बई

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में भिन्नता देखने को मिलती है। विभक्ति भाव देखने को मिलता है। एक ही जीव भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को प्राप्त कर उनमें परिणत हो जाता है। कभी वह नरक, कभी तिर्यन्च तो कभी मनुष्य रूप में जन्म लेता है तो कभी देवगति को प्राप्त हो जाता है। यह विभिन्नता-विभक्तिभाव कर्म से होता है, अकर्म से नहीं होता।

संसार में मनुष्य गति में सबसे कम जीव है और तिर्यन्च गति में सबसे ज्यादा जीव हैं। दो राशियां बताई गई हैं- व्यवहार राशि और अव्यवहार राशि। व्यवहार राशि में तो भिन्नता हो सकती है पर अव्यवहार राशि में यह भिन्नता नहीं है। अनादिकाल से वे जीव अव्यवहार राशि वनस्पतिकाय में है। आज तक वे इस गति के सिवाय किसी अन्य गति में पैदा ही हुए नहीं है। उसी गति मे जन्म-मरण अनादिकाल से कर रहे हैं।

व्यवहार राशि के जीव जितने हैं, उतने ही रहते हैं। जितने जीव मोक्ष में चले जाते हैं, उतने जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं। जीवों का अक्षय कोष अव्यवहार राशि का है, वो कभी खाली होने वाला नहीं है। मनुष्य जगत में भी कितनी भिन्नता है। धरती की भी कितनी भिन्नता है। भाषा की भिन्नता है। भिन्नता का मुख्य आधार कर्म है, चाहे जीव है या जीव समूह, यह जगत है।

जैन दर्शन ईश्वर कृत भिन्नता को नहीं मानता। बौद्धिकता और अबौद्धिकता का भी मनुष्यों में विभाग है। यह भिन्नताएं कर्म के कारण ही होती हैं, अकर्म से नहीं। आदमी इस सिद्धांत को समझकर अच्छा कर्म करने का प्रयास करें। आदमी अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियों में भी समताभाव रखने का प्रयास करे और अपने पूर्वकृत कर्मों को धर्म-साधना, स्वाध्याय, जप, तप के द्वारा काटकर हल्का बनने का प्रयास करे। हम इस सिद्धान्त को समझकर यह सोचें कि मुझे जो सुख-दुःख मिल रहा है, वह मुख्यतया मेरे कर्म से है। मैं दूसरों पर इसका श्रेय क्यों दूं? आरोपण क्यों करूं? निमित्त हो सकता है। यह समझें कि मेरा कर्मों का कर्जा चुकता हो रहा है आगे खराब कर्म मत करो। उससे बचने का प्रयास हो। आदमी को बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ने और अपने कर्म को अच्छा बनाने का प्रयास करना चाहिए।

कालूयशोविलास की सुविवेचना करते हुए पूज्यवर ने पूज्य कालूगणी द्वारा मुनि तुलसी को युवाचार्य पद पर स्थापित करने के चिन्तन के प्रसंग को समझाया। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

देवों के पांच प्रकार प्रज्ञप्त : आचार्यश्री महाश्रमण

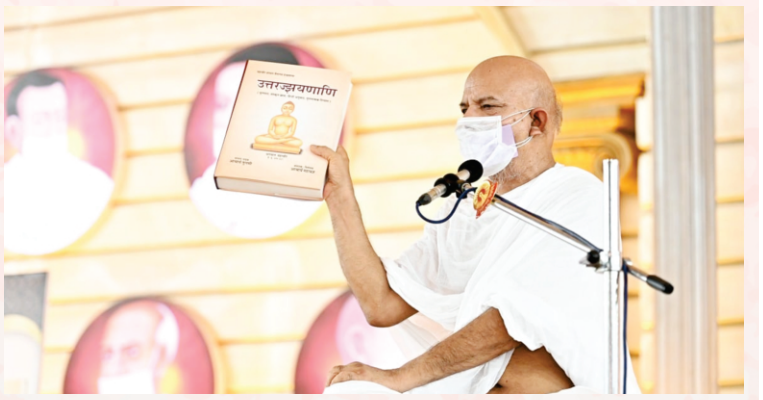

पूज्यवर ने पावन आशीर्वचन के रूप में फरमाते हुए कहा- आगम मंथन प्रतियोगिता ज्ञान बढ़ाने का माध्यम है।

नन्दनवन-मुम्बई
२३ अगस्त २०२३

आगम वेत्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र के बारहवें सूत्र के नौवें उद्देशक में प्रश्न किया गया कि भन्ते! देव कितने प्रकार के होते हैं? उतर दिया गया कि हमारी सृष्टि में विभिन्न प्राणी रहते हैं। नरक, तिर्यन्च, मनुष्य और देवता भी हैं। यहां सिर्फ देवलोक वाले देव ही नहीं बताये गये हैं और भी देव बताये गये हैं।

जिनकी आराधना पूजा की जाती है, वो देव होते हैं। यहां देव के पांच प्रकार प्रज्ञप्त है। भव्य-द्रव्य देव, नर देव, धर्म देव, देवाधि देव और भाव देव। वह प्राणी जो अगले जन्म में देवगति में पैदा होने वाला होता है, वह भव्य-द्रव्य देव है। अनेक मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यन्च योनि वाले जीव जो अगली गति में देव बनने वाले हैं, वे भव्य-द्रव्य देव कहलाते हैं।

मनुष्यों में जो नरेन्द्र होते हैं, चक्रवर्ती होते हैं, वे नर देव कहलाते हैं। भौतिक जगत में मनुष्यों में चक्रवर्ती से बड़ा कोई नहीं होता है। बत्तीस-श्रेष्ठ राजा उनका अनुसरण करते हैं। दो चक्रवर्ती या दो तीर्थंकर कभी आपस में नहीं मिलते हैं। जो धर्म की दृष्टि से पूजनीय है, अणगार साधु हैं, ये धर्म देव कहलाते हैं। इनमें सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र होता है।

जो अर्हत् भगवान हैं, अतीत, वर्तमान, भविष्य के ज्ञाता हैं, ये तीर्थंकर देवाधिदेव कहलाते हैं। वर्तमान में जो भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक, जो चार प्रकार की गति के देव हैं, वे भाव देव होते हैं। इस प्रकार देव के इस विभाग में मनुष्य, तिर्यंच, देव सभी समाहित हो जाते हैं। कुछ ऐसे भी मनुष्य होते हैं, जो एक जन्म में चक्रवर्ती और तीर्थंकर बन जाते हैं। भाव देवों की पूजा लौकिक पूजा कहलाती है। मनुष्य उनसे सहयोग भी मांगते हैं।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का विवेचन कराते हुए मुनि तुलसी को पूज्य कालूगणी द्वारा दी गई प्रेरणाओं के प्रसंगों को व्याख्यायित किया।

जैन विश्व भारती द्वारा 'उत्तर-झयणाणि' आगम पर आधारित 'आगम मंथन प्रतियोगिता' के बैनर का अनावरण पूज्यवर की सन्निधि में किया गया। पूज्यवर ने आशीर्वचन के रूप में फरमाया कि आगम मंथन प्रतियोगिता ज्ञान बढ़ाने का माध्यम है। आध्यात्मिक-धार्मिक विकास होता रहे। गौतम डागा ने इस प्रतियोगिता के संदर्भ में जानकारी प्रदान की।

तुलसी जैन 'तुषरा' ने अपनी पुस्तक 'अनन्य प्रयोग प्रेरक लघु कथाएं' गुरु चरणों में लोकार्पित की। इस संदर्भ में सुनीता जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी। पूज्यवर ने पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ज्ञान है आत्मा का एक पर्याय, एक गुण : आचार्यश्री महाश्रमण

जयचन्दलाल मालू को टीपीएफ गौरव अलंकरण प्रदान करते हुए

नन्दनवन-मुम्बई
२५ अगस्त २०२३

तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है कि ज्ञान आत्मा का एक पर्याय है, गुण है। द्रव्य आत्मा में अनेक भाव आत्माएं भी होती हैं। तीन आत्माएं हर जीव में उपलब्ध होती हैं। जैसे द्रव्य आत्मा, दर्शन आत्मा और उपयोग आत्मा। शेष किसी में है, किसी में नहीं भी। ये तीन आत्माएं हमेशा सहचर हैं, सर्वत्र है। ये तीन आत्माऐं जीव से छूटती नहीं हैं।

यहां प्रश्न किया गया है कि सबसे कम कौनसी आत्मा है? उत्तर दिया गया कि सर्वविरति चारित्र आत्मा वाले जीव सबसे कम होते हैं। उनकी अपेक्षा ज्ञान आत्मा वाले अनन्त गुणा है। उसकी अपेक्षा कषाय आत्मा वाले जीव उनसे भी अनन्त गुणा हैं। फिर योग आत्मा वाले जीव उनसे भी विशेषाधिक हैं। वीर्य आत्मा वाले जीव उनसे भी विशेषाधिक हैं। द्रव्य, दर्शन और उपयोग ये तीनों समान रूप में उनसे भी विशेषाधिक हैं।

आत्मा ज्ञान है या आत्मा से भिन्न कोई ज्ञान नाम का तत्त्व है। ज्ञान नियमतः आत्मा ही है। आत्मा होगी तो ज्ञान होगा। ज्ञान और दर्शन ये आत्मा के गुण है। भाषा का ज्ञान भी होता है और विषय का ज्ञान भी होता है। भाषा तो ज्ञान अर्जन करने का माध्यम है। मूल तो विषय ही है। भाषाएं अनेक है। ज्ञान-ज्ञान में भी अन्तर है। लौकिक ज्ञान अलग है तो आध्यात्मिक ज्ञान अलग है।

अपने-अपने क्षेत्र के अनुसार ज्ञान अर्जित करना अपेक्षित होता है। ज्ञान के भंडार ग्रन्थों का अपना विशेष महत्व होता है। ग्रन्थों की अवज्ञा न हो। हम धर्म-अध्यात्म-विद्या का ज्ञान अर्जित करने का प्रयास करें। हम जैन धर्म से जुड़ें हैं तो जैन धर्म के सिद्धान्तों को समझें। ज्ञान से हमारे में वैराग्य के भाव बढ़े। आत्म कल्याण की प्रेरणा मिले। ज्ञान है, वह आत्मा ही है। ग्रन्थ तो ज्ञान के माध्यम होते हैं। आदमी को निरंतर ज्ञान का विकास करने का प्रयास करना चाहिए।

कालूयशोविलास की विवेचना करते हुए पूज्यवर ने पूज्य कालूगणी द्वारा दी गई शिक्षाओं के प्रसंग का वर्णन किया।

जगदीश मादरेचा ने ३४ की तपस्या एवं अन्य तपस्वियों ने अपनी तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किये।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का कार्यक्रम टी०पी०एफ० गौरव अलंकरण समारोह पूज्यवर की सन्निधि में आयोजित हुआ। टी०पी०एफ० के महामंत्री विमल शाह ने वर्ष २०२३ का टी०पी०एफ० गौरव अलंकरण जयचंदलाल मालू को प्रदान करने की घोषणा की। टी०पी०एफ० के मुख्य न्यासी चन्द्रेश जैन ने उनका परिचय प्रस्तुत किया।

टी०पी०एफ० के पदाधिकारियों द्वारा जयचंदलाल मालू को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान प्राप्त करने के उपरान्त जयचंदलाल मालू ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पूज्यवर ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में गुणरूप विशेषताएं होती हैं, तो जीवन सुशोभित हो जाता है। अपने जीवन में सम्यक् ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना का प्रयास होना चाहिए।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आध्यात्मिक एवं देशभक्ति से सारोबार रहा सरगम 'सुरों का महासंग्राम'

सरगम सीजन-४ का प्रथम सेमीफाइनल

नवसारी

अभातेयुप निर्देशित सरगम 'सुरों का महासंग्राम' के प्रथम सेमीफाइनल का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में नवसारी स्थित उदय पैलेस में तेयुप नवसारी द्वारा आयोजित किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई तत्पश्चात् नवसारी परिषद् द्वारा विजय गीत के द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया।

तेयुप नवसारी अध्यक्ष राकेश मांडोत ने स्वागत करते हुए परिषद् के कार्यों की संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। इस सेमीफाइनल में भारत के सुदूर क्षेत्रों से १६ युगल प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों ने प्रथम चरण में गुरु आराधना एवं द्वितीय चरण में देशभक्ति गीतों के ऊपर अपनी मनमोहक प्रस्तुतियां दी। अहमदाबाद से जिज्ञासा पिंचा-निष्ठा टोडरवाल, नवसारी से दिनेश टेबा-गिरीश पोखरना, सचिन से पीयूष ओस्तवाल-श्रुति चपलोत, जयपुर से सुनील दूगड़-धर्मेंद्र बोथरा, घाटकोपर से स्वीटी मेहता-रिंकल लोढ़ा, गंगाशहर से प्रियंका जैन-रीया जैन, केलवा से जागृति-झील कोठारी को फाइनल में प्रवेश मिला। इस कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन गोपाल निर्वाण, मनीषा शाह व राकेश शाह ने किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेयुप नवसारी सदस्य संख्या में छोटी परिषद् होते हुए भी अपने आप में एक अच्छी सक्रिय परिषद् है। अभातेयुप का यह आयाम समाज की प्रतिभाओं को मंच देकर उन्हें समाज के सामने प्रस्तुत करता है।

इस अवसर पर अभातेयुप से उपाध्यक्ष प्रथम रमेश डागा, उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री अनंत बागरेचा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष नवरतन टेबा, परिषद् प्रभारी सौरभ पटावरी, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा रमीला काल्या, सरगम राष्ट्रीय प्रभारी सुनिल चिंडालिया, सह प्रभारी प्रसन्न पामेचा, सरगम गुजरात प्रभारी निलेश टेबा, अभातेयुप परिवार, तेयुप नवसारी अध्यक्ष राकेश मांडोत, तेयुप नवसारी के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं सहित श्रावक-श्राविका समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच पर सभी प्रतिभागियों एवं निर्णायकगण का सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन सूरत से समागत आर॰ जे॰ राजुल सुराणा एवं मंच संचालन परिषद् से निलेश टेबा ने किया एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप की पूरी टीम ने अथक श्रम का नियोजन किया। अंत में आभार परिषद् मंत्री महावीर मांडोत ने किया।

कार्यक्रम के प्रायोजक के रूप में शांतिलाल, नवरतन टेबा, बेमाली-नवसारी ने अपना सहयोग दिया।

सरगम सीजन-४ का द्वितीय सेमीफाइनल

विजयनगर

अभातेयुप निर्देशित सरगम 'सुरों का महासंग्राम' के द्वितीय सेमीफाइनल का आयोजन अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा की अध्यक्षता में विजयनगर स्थित कासिया भवन ओडिटोरियम में तेयुप विजयनगर द्वारा किया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम की शुरुआत नवकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण से हुई। तत्पश्चात विजयनगर परिषद् द्वारा संचालित विजय स्वर संगम के द्वारा मंगलाचरण का संगान किया गया। विजयगीत का संगान सरगम की टीम द्वारा किया गया।

तेयुप विजयनगर अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने सभी का स्वागत करते हुए परिषद् के कार्यों की जानकारी सभी के सम्मुख रखी।

इस सेमीफाइनल में भारत के करीमगंज, तिरुपुर, बीकानेर, टिटलागढ़, दिल्ली, आर. आर. नगर, यशवंतपुर, गांधीनगर, विलिपुरम, भुवनेश्वर आदि क्षेत्रों से कुल १४ युगल प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सभी प्रतिभागियों ने दो चरणों में अपनी प्रस्तुतियां दी। प्रथम चरण में गुरु आराधना एवं द्वितीय चरण में देशभक्ति गीतों के ऊपर सभी ने मनमोहक प्रस्तुति प्रदान की। तिरुपुर, बीकानेर, आर. आर. नगर, यशवंतपुर, गांधीनगर के प्रतिभागियों को सीधे फाइनल में प्रवेश मिला एवं एक टीम को रिजर्व में स्थान दिया गया। इस कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका का निर्वहन दिगम्बर राव चौहान, पुष्पा राठौड़ व मिठालाल पावेचा ने किया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेयुप विजयनगर अपने आप में एक विशिष्ट परिषद् है एवं यहां जो भी कार्यक्रम आयोजित होते हैं, वे युवाओं की निष्ठा और श्रम से अपने आप में विशिष्ट बन जाते हैं।

अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष व मुख्य अतिथि विमल कटारिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संगीत का नाम मात्र सुनने से मन में हिलोरें पैदा हो जाती है, व्यक्ति भाव विभोर हो जाता है। अभातेयुप का यह आयाम समाज की प्रतिभाओं को निखारने हेतु सशक्त मंच प्रदान करता है।

इस अवसर पर अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा, महामंत्री पवन मांडोत, सहमंत्री अनंत बागरेचा, कोषाध्यक्ष भरत मरलेचा, प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के उपाध्यक्ष हिम्मत मांडोत, अणुव्रत विश्व भारती संगठन मंत्री राजेश चावत, तेरापंथी सभा अध्यक्ष प्रकाश गाँधी, विजयनगर परिषद् प्रभारी सोनू डागा, तेरापंथ महिला मंडल उपाध्यक्षा बरखा पुगलिया, अर्हम मित्र मंडल अध्यक्ष बहादुर सेठिया, राजस्थान परिषद् अध्यक्ष बालचंद चिंडालिया, विजयनगर परिषद् अध्यक्ष ललित सेठिया, सरगम राष्ट्रीय प्रभारी सुनिल चिंडालिया, सह प्रभारी प्रसन्न पामेचा, सरगम दक्षिण प्रभारी महावीर टेबा, निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांश गोलछा, परिषद् के समस्त पदाधिकारीगण, अभातेयुप परिवार, स्थानीय अन्य परिषदों के पदाधिकारीगण, तेयुप विजयनगर के सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं सहित श्रावक श्राविका समाज की गरिमामयी उपस्थिति रही। मंच पर सभी सहयोगी संस्थाओं, प्रतिभागियों एवं निर्णायकगण का सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम का संचालन सूरत से समागत आर॰ जे॰ राजुल सुराणा एवं मंच संचालन परिषद् मंत्री कमलेश चोपड़ा ने किया एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में तेयुप विजयनगर से संयोजक अभिषेक कावड़िया व पूरी टीम ने अथक श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम के प्रायोजक के रूप में मनोहरलाल, राकेश बाबेल, ठीकरवास कलां-बैंगलोर का सहयोग प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 सितम्बर - 10 सितम्बर 2023

✦ आदर्श चुनने के साथ संकल्प बल का होना भी अपेक्षित है। संकल्प बल के साथ उत्साह व साहस भी बना रहना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर में १०१ रक्त यूनिट संग्रह

साउथ हावड़ा

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के सेवा के महत्वपूर्ण आयाम मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। साउथ हावड़ा क्षेत्र के राघव रेजीडेंसी में आयोजित इस रक्तदान शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान से हुआ। परिषद् के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी का स्वागत -अभिनंदन किया। शिविर में राघव रेजीडेंसी के मंत्री राजीव अग्रवाल ने अपने भाव प्रस्तुत किये।

शिविर में तेयुप प्रबंध मंडल, कार्यसमिति सदस्यों, विशेष आमंत्रित सदस्यों, साधारण सदस्यों एवं किशोर मंडल के किशोरों की अच्छी उपस्थिति रही। शिविर में कुल १०१ यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में उपाध्यक्ष एवं मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के पर्यवेक्षक विक्रम भंडारी एवं संयोजक अभिषेक खटेड़, मोहित बैद, भरत भंडारी, पारस बरड़िया सहित अजीत दुगड़, अभिषेक चोरड़िया, पवन कुंडलिया, अरिहंत हिंगड़ एवं राघव रेजीडेंसी से राजेश घोड़ावत, राकेश चोरड़िया, जुगराज भंडारी, खिवकरण कुंडलिया, सुरेन्द्र डागा, संदीप तातेड़, आनंद दुगड़, श्याम बैद का विशेष श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन मंत्री अमित बेगवानी ने किया।

परिषद उपाध्यक्ष एवं एमबीडीडी के पर्यवेक्षक विक्रम भंडारी ने राघव रेजीडेंसी, प्रायोजक नरेंद्र-सुमन भंसाली परिवार, लाइफ केयर ब्लड बैंक एवं सभी रक्तदाताओं का आभार व्यक्त किया।

आत्मा का निर्मल बनाता है-तप

कानपुर

साध्वी संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में तपस्वी बहिन सुधा बुच्चा के १५ दिन (पखवाड़े) की तपस्या के अनुमोदन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्रीजी के महामंत्रोचार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी।

साध्वी संगीतश्रीजी ने अपने वक्तव्य में तपस्या के महत्व को उजागर करते हुए फरमाया कि जैन धर्म की संस्कृति त्याग और तप की संस्कृति है। हम सब बहुत ही भाग्यशाली हैं कि हमें आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महातपस्वी आचार्य मिले हैं। उनके आशीर्वाद से दृढ़ शक्ति वाले व्यक्ति ही तपस्या कर सकते हैं। साध्वी मुदिताश्रीजी ने फरमाया कि रस इंद्रियों पर विजय पाना बहुत ही कठिन काम है। साध्वी कमलविभाजी ने तपस्विनी बहन सुधा के नाम का अर्थ अमृत बताते हुए फरमाया कि तपस्या रूपी अमृत आपने कानपुर में फैला दिया है। तप के द्वारा व्यक्ति अपने कर्मों का क्षय कर आत्मा को निर्मल बनाता है। साध्वी शांतिप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि जिस प्रकार सौंदर्य प्रसाधनों से बाहर की त्वचा को सुंदर बनाया जा सकता है, उसी तरह आत्म उत्थान के लिए तप बहुत आवश्यक है। साध्वीवृंद ने सामूहिक रूप से तपस्या के भावों से ओत-प्रोत स्वरचित गीतिका का संगान कर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को भाव विभोर कर दिया।

तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष दिलीप मालू, तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा, पूनमचंद सुराणा ने तपस्विनी बहिन के तप की अनुमोदना स्वरूप अपने विचार और गीतिका प्रस्तुत की। तपस्विनी बहिन सुधा बुच्चा के परिवार की ओर से राजकुमार बुच्चा तथा शालिनी बुच्चा ने अपने विचार रखे एवं उनकी सहेलियों ने मधुर गीतिका का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा एक सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति हुई। परिवार के सदस्यों ने साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। तपस्विनी बहिन को तेरापंथी सभा द्वारा प्रशस्ति पत्र और साहित्य के द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया। तपस्विनी बहिन ने साध्वीश्रीजी से तप का प्रत्याख्यान किया।

तप से होता है भीतरी चेतना का विकास

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में सुजानी देवी पगारिया के मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, साउथ कोलकाता द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- 'जैन धर्म आध्यात्मिक व वैज्ञानिक धर्म है। इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए हैं और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर हुए हैं। भगवान महावीर ने आत्मशुद्धि, आत्माराधना, चैतन्य जागरण के लिए अनेक उपाय बताए हैं, उनमें एक महत्त्वपूर्ण उपाय है तप। तप जीवन को संतुलित रखता है। तप मंगल है, क्योंकि तप शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा चारों को मंगलमय बनाता है। तप से विजातीय तत्त्व बाहर निकलते हैं। शरीर रोग मुक्त होता है। मन, बुद्धि और आत्मा का विकास होता है और कर्मों का शोधन होता है । कर्म शरीर को तपाने वाला अनुष्ठान है- तप। कर्म क्षय का असाधारण हेतु है। तपस्वियों का स्वागत त्याग से होता है। तप करना, तप करवाना, तप का समर्थन करना भी धर्म है। तप से भीतरी चेतना में प्रकाश होता है। उपसर्ग व उपद्रव दूर होते हैं। सुजानी देवी ने ८० वर्ष की उम्र में मासखमण की तपस्या कर अद्भुत साहस का परिचय दिया है।' मुनिश्री ने सुजानी देवी एवं अन्य सभी तपस्वियों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की।

कार्यक्रम का शुभारंभ बाल मुनि कुणालकुमारजी के मंगलाचरण से हुआ। साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने अभिनंदन पत्र का वाचन करते हुए तप अनुमोदना में विचार व्यक्त किये। साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश का वाचन तेरापंथी सभा के मंत्री कमल सेठिया ने किया। कोलकाता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली व प्रवीण पगारिया ने तप अनुमोदना में अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया। तपस्विनी बहिन सुजानी देवी पगारिया का साउथ कोलकाता सभा द्वारा मोमेंटो एवं अभिनंदन पत्र के द्वारा सम्मान किया गया।

विघ्न विनाशक और मंगलकारी है भक्तामर

औरंगाबाद

मुनि अर्हत्कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा द्वारा स्वास्तिक आकार में भक्तामर का अनुष्ठान औरंगाबाद में पहली बार हुआ। इस अवसर पर उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि भरतकुमारजी ने कहा कि भारतीय परंपरा में मंत्र स्त्रोत आदि का बहुत बड़ा महत्व है। जैन धर्म में अनेक मंत्र स्त्रोत है, जो स्वयं में सिद्ध एवं चमत्कारी है। भक्तामर स्त्रोत एक ऐसा विशिष्ट स्त्रोत है, जो आधि, व्याधि एवं उपाधि का नाश कर व्यक्ति के जीवन में समाधि को प्रकट करता है। भक्तामर का अर्थ है- भक्त-अमर, जो भक्तों को अमर बना दे, उसे शाश्वत सुख प्रदान करे, वही भक्तामर है।

यह विघ्नविनाशक, मंगलदायक, शांतिप्रदायक है। इसकी विधिवत साधना करने से व्यक्ति को इच्छित फल की प्राप्ति होती है एवं सिद्धि का द्वार खुलता है। आचार्यश्री मानतुंग की आदिनाथ भगवान पर आधारित यह श्रद्धासिक्त स्तुति जीवन में इंद्रधनुषी रंग भरती है। मुनिश्री ने हर व्यक्ति को नियमित इसकी स्तुति करने की प्रेरणा दी।

मुनि भरतकुमारजी ने विविध मंत्रोचार से नई ऊर्जा का स्फुरण किया। बाल संत मुनि जयदीपकुमारजी ने गीतिका का संगान किया।

तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा, सुधीर बांठिया, जयेश सुराणा, मयूर आच्छा, भावना सेठिया, सुनीता सेठिया का विशेष सहयोग रहा। इस आयोजन में तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद् का अतुलनीय सहयोग रहा। अंत में आभार ज्ञापन महेंद्र मरलेचा ने किया।

टीपीएफ द्वारा प्रमाण पत्र वितरण समारोह

चेन्नई

तेरापंथ भवन साहुकारपेट में साध्वी लावण्यश्रीजी के पावन सान्निध्य में प्रातःकालीन प्रवचन के दौरान तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा संचालित आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर के तहत हुनर प्रोजेक्ट के दो कंप्यूटर कोर्स- अकाउंटिंग एंड टैली एवं ग्राफिक डिजाइनिंग में उत्तीर्ण संभागियों को प्रमाण पत्र द्वारा पुरस्कृत किया गया।

साध्वीवृंद के नमस्कार महामंत्र से मंगलाचरण हुआ। टीपीएफ राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य डॉ॰ कमलेश नाहर ने टीपीएफ की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर के राष्ट्रीय संयोजक डॉ॰ दिनेश धोका ने देशभर में संचालित इसकी गतिविधियों से अवगत कराते हुए समाज से पूर्ण सहयोग का आह्वान किया। हुनर प्रोजेक्ट राष्ट्रीय संयोजक अनिल लुणावत ने बताया कि टैली कोर्स का १८वां एवं ग्राफिक डिजाइनिंग कोर्स का ५वां बैच सानंद संपन्न हुआ। जिसमें लगभग ४० विद्यार्थियों ने लाभ लिया।

साध्वी लावण्याश्रीजी ने अपने प्रेरणा पाथेय में टीपीएफ के इस महनीय उपक्रम 'हुनर' को सराहा और युवाओं को शिक्षित करने के इस प्रयास की प्रशंसा की। अभिभावकों को भी संबोधित करते हुए कहा कि ऐसी कक्षाओं का लाभ लेकर हमारी आने वाली पीढ़ी को तैयार करने में हम अपना योगदान दें।

विद्यार्थियों में से अरिहंत लुणावत एवं भाविक नाहर ने इस कोर्स के सुखद अनुभव एवं उपयोगिता को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथ मेडिकल एवं एजुकेशनल ट्रस्ट के महावीर गेलड़ा, तेरापंथी सभा चेन्नई मंत्री अशोक खतंग, तेरापंथ युवक परिषद् अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा आदि अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। हुनर प्रोजेक्ट के ग्राफिक डिजाइनिंग अध्यापक सिद्धांत लुंकड़ का सम्मान किया गया। हुनर संयोजक विवेक बोथरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

स्वतंत्रता दिवस पर रैली ऑन व्हील्स

बेंगलुरु

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलुरु के अंतर्गत तेरापंथ किशोर मंडल बेंगलुरु द्वारा रैली ऑन व्हील्स का आयोजन किया गया। तेरापंथ भवन गांधीनगर से प्रारंभ होकर रैली विभिन्न मार्गों से होते हुए आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर राजाजीनगर पहुंची। परिषद् के अध्यक्ष रजत बैद, किशोर मंडल प्रभारी विमल धारीवाल, संयोजक आयुष पोकरणा, सहसंयोजक गगन संचेती एवं जय कोठारी के साथ अनेकों युवा एवं किशोर साथियों ने इस रैली में जोश के साथ भाग लिया।

रैली के माध्यम से देश भक्ति से ओत प्रोत जयघोषों के साथ नशा मुक्ति की भी प्रेरणा जन साधारण को दी गई। किशोरों का महनीय श्रम इस आयोजन में लगा।

रक्षाबंधन कार्यशाला के विविध आयोजन

उदयपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद्, उदयपुर द्वारा साध्वी डॉ॰ परमप्रभाजी के सान्निध्य में रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन नाइयों की तलाई उदयपुर में किया गया। साध्वीश्रीजी के नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। संस्कारक सुबोध दुगड़, मनोज लोढ़ा, पंकज भंडारी ने विभिन्न मंत्रोच्चार के माध्यम से प्रतीक स्वरूप भाई आशीष जैन एवं बहिन सृष्टि जैन को बुलाकर रक्षाबंधन पर्व को आयोजित करने की विधि बताई। संस्कारकों ने जैन संस्कार विधि के बारे में बताया तथा ज्यादा से ज्यादा इस विधि के माध्यम से आयोजन करने की प्रेरणा दी।

कार्यशाला में स्वागत तेयुप अध्यक्ष विक्रम पगारिया ने, संचालन तेयुप मंत्री भूपेश खमेसरा ने एवं आभार तेयुप उपाध्यक्ष अशोक चोरड़िया ने व्यक्त किया। साध्वी डॉ॰ परमप्रभाजी के मंगलपाठ से कार्यशाला सम्पन्न हुई।

सूरत

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा साध्वी त्रिशलाकुमारीजी के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि से रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन महाप्रज्ञ सभागार तेरापंथ भवन के प्रांगण में किया गया। जिसमें संस्कारक सुशील गुलगुलिया, मनीषकुमार मालू, हिम्मत बंब, विनीत सामसुखा, गौतमचंद वेदमुथा, बजरंग बैद ने लगभग ३० भाई बहिनों के जोड़ों को मंगल मंत्रोच्चार एवं जैन संस्कार विधि की संपूर्ण व्याख्या करते हुए कैसे मनाए रक्षाबंधन बताया गया। इस अवसर पर तेयुप सूरत के अध्यक्ष सचिन, मंत्री श्रीयांस एवं उनकी पूरी टीम व साथ ही कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिती रही। साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने जैन संस्कार विधि को अपनाने की प्रेरणा देते हुए मंगल उद्बोधन प्रदान किया व अंत में मंगलपाठ के रुप में आशीर्वाद प्रदान किया।

औरंगाबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन मुनि अर्हत्कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद्, औरंगाबाद द्वारा किया गया। कार्यशाला में उपस्थित श्राविका-श्राविकाओं को रक्षाबंधन जैन संस्कार विधि से मनाने के लिए प्रेरणा दी गई। जैन संस्कारक विवेक बागरेचा और अंकुर लुणिया ने उपस्थित जनमेदिनी को सुनियोजित तरीके से रक्षा बंधन को जैन संस्कार विधि से संपन्न करने के बारे में बताया।

ज्ञानशाला औरंगाबाद की प्रशिक्षिकाओं ने केंद्र द्वारा निर्धारित आयाम के अंतर्गत सभी बच्चों के लिए हस्तनिर्मित राखी एवं संकल्पों के माध्यम से बच्चों को रक्षाबंधन मनाने के लिए प्रेरणा दी। तेयुप अध्यक्ष अंकुर लुणिया, तेमम अध्यक्ष भावना सेठिया और ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षका प्रियंका सुराणा ने सभी का स्वागत किया। आभार माया मुथा ने किया।

साउथ हावड़ा

अभातेयुप द्वारा निर्देशित रक्षाबंधन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा द्वारा तेरापंथी सभा भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अभातेयुप उपाध्यक्ष रमेश डागा एवं सहमंत्री अनंत बागरेचा ने नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ कराया। संस्कारक ऋषभ दुधोड़िया, पवन बैंगाणी, हितेंद्र बैद ने जैन मंत्रोच्चार के द्वारा कार्यक्रम संपादित कराया। अध्यक्ष गगनदीप बैद ने पधारे सभी आगंतुकों का स्वागत किया। संस्कारकों द्वारा रक्षाबंधन कार्यशाला में राखी का महत्व बताते हुए जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार करके किस प्रकार कार्यक्रम संपादित करवाया। प्रबंध समिति, कार्यसमिति सदस्य, साधारण सदस्य, किशोर मंडल सदस्यों सहित श्रावक समाज की उपस्थिति रही। सहमंत्री राहुल दुगड़ ने शुभकामना एवं कार्यशाला में उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया। संयोजक अजित दुगड़, ऋषभ बैद, ऋषभ सिपानी ने अपने श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक अजीत दुगड़ ने किया।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

✻ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✻ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✻ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✻ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✻ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✻ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✻ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✻ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✻ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✻ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✻ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✻ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✻ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✻ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✻ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

सम्यक् दर्शन कार्यशाला के विविध आयोजन

तिरुपुर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वाधान में तिरुपुर तेरापंथ महिला मण्डल के द्वारा साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला का आयोज़न हुआ। आयोजन की मुख्य वक्ता अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की मुख्य ट्रस्टी पुष्पा बैंगानी रहीं। साध्वीश्रीजी के द्वारा महामंत्रोच्चारण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने किया।

मुख्यवक्ता अभातेमम मुख्य ट्रस्टी तत्वज्ञ श्राविका पुष्पा बैंगानी ने बताया कि श्रावक के लिए सम्यक् दर्शन कितना महत्त्वपूर्ण है, वह कैसे आता और जाता है, हम अपने सम्यक् दर्शन को कैसे पुष्ट रख सकते हैं। अगर हमें अपने अंतिम पड़ाव मोक्ष तक पहुंचना है तो हमें पहले पड़ाव सम्यक् दर्शन को पार करना बहुत जरूरी है। अगर एक बार क्षायिक सम्यक्तव आ गया तब हमें अपने अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुंचने से कोई नहीं रोक सकता।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्रीजी ने फरमाया- जैन दर्शन में सम्यक दर्शन का बहुत बड़ा महत्व है। इसका तात्पर्य है-यथार्थ दृष्टिकोण। आज की वर्तमान भाषा में यदि कहें तो पॉजिटिव थिंकिंग। भगवान महावीर ने कहा जो तत्व जिस रूप में है, उसी उसी रुप में मानना सम्यक दर्शन है। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया। कार्यशाला का संचालन सहमंत्री पूनम कोठारी ने किया।

बेंगलूरु

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित सम्यक दर्शन कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् बेंगलुरु द्वारा मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में निरंतर ११ दिनों तक रात्रिकालीन सत्र में किया गया।

मुनि हिमांशुकुमारजी के सहवर्ती मुनि हेमंतकुमारजी ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक 'शरीर और आत्मा' के आधार पर विभिन्न विषयों को समझाते हुए आत्मवाद एवं अनात्मवाद की व्याख्या की। भगवान पार्श्वनाथ की परंपरा के आचार्यश्री कुमारश्रमण केशी एवं राजा प्रदेशी के बीच हुए संवाद पर आधारित शरीर और आत्मा पुस्तक के माध्यम से शरीर की नश्वरता एवं आत्मा की शाश्वत सत्ता को मुनि हेमंतकुमारजी ने सरल ढ़ंग से व्याख्यायित किया।

कार्यशाला में १२० सदस्यों की संभागिता रही। प्रतिदिन लक्की ड्रा एवं प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को पदाधिकारियों एवं गणमान्य व्यक्तियों द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यशाला के प्रायोजक विमलचंद, प्रदीप भंडारी का सम्मान परिषद उपाध्यक्ष विवेक मरोठी एवं कार्यशाला संयोजक विनोद कोठारी ने किया। कार्यशाला में अध्यक्ष रजत बैद आदि पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों के साथ अनेकों श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

विजयनगर

विजयनगर बेंगलुरु में स्थित तेरापंथ सभा भवन में मुनि दीपकुमारजी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं समण संस्कृति संकाय के संयुक्त तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा सम्यक् दर्शन कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। मुनि काव्यकुमारजी ने 'शरीर और आत्मा' पुस्तक आधारित कार्यशाला की मुख्य अभिव्यक्ति दी।

मुनि दीपकुमारजी ने कहा कि साधु-संत सन्मार्ग प्रदाता होते हैं। आध्यात्मिक मार्गदर्शन द्वारा व्यक्ति उन्मार्ग से सन्मार्ग की ओर गतिमान हो जाता है। सम्यक् दर्शन कार्यशाला द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की कृति 'शरीर और आत्मा' द्वारा आत्मवाद को समझने में सुगमता हो सकती है।

मुनि काव्यकुमारजी ने कहा राजा प्रदेशी का व्याख्यान आपने बहुत बार सुना है, जो बहुत ही क्रूर हिंसक राजा था, जिसके लिए कहा गया कि उसके हाथ हमेशा खून से लिप्त रहते थे। एक दिन वह भी आया जब वह व्रती श्रावक बन गया। केशी कुमार श्रमण, राजा प्रदेशी के मार्गदर्शक बने और उनमें रूपांतरण घटित हो गया।

मुनिश्री ने इस कार्यशाला में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जुड़कर इसका अध्ययन एवं स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। संयोजक पवन बैद ने कार्यशाला के बारे में जानकारी प्रदान की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 सितम्बर - 10 सितम्बर 2023

✦ समाज में यदि एक-दूसरे के प्रति प्रमोद भावना है, प्रोत्साहन है तो वह समाज प्रगति कर सकता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

: आचार्य तुलसी :

(क्रमशः)

आगम-साहित्य में ध्यान विषयक कोई स्वतंत्र आगम उपलब्ध नहीं है। नंदी-सूत्र की उत्कालिक आगमों की सूची में 'ध्यान-विभक्ति' नामक आगम का उल्लेख है, किंतु वह आज उपलब्ध नहीं है। इस स्थिति में उपलब्ध आगम साहित्य में आए हुए ध्यान-विषयक प्रकरणों का अध्ययन शुरू किया और साथ-साथ उनके व्याख्या-ग्रंथों तथा ध्यान-विषयक उत्तरवर्ती साहित्य का भी अवगाहन किया। इस अध्ययन से जो प्राप्त हुआ उसके आधार पर ध्यान की एक रूपरेखा उत्तराध्ययन के टिप्पणों में प्रस्तुत की गई। विक्रम संवत् २०१८ में आचार्यश्री ने 'मनोनुशासनम्' की रचना की। मैंने पहले उसका अनुवाद किया और वि०सं० २०२४ में उस पर विशद व्याख्या लिखी। उसमें जैन-साधना पद्धति के कुछ रहस्य उद्घाटित हुए। वि०सं० २०२८ में आचार्यश्री के सान्निध्य में साधु-साध्वियों की विशाल परिषद् में जैन योग के विषय में पाँच भाषण हुए। उससे दृष्टिकोण को और कुछ स्पष्टता मिली। वे 'चेतना का ऊर्ध्वारोहण' इस शीर्षक से प्रकाशित हैं। भगवान् महावीर की पच्चीसवीं निर्वाण शताब्दी के वर्ष में 'महावीर की साधना का रहस्य' पुस्तक प्रकाशित हुई। ये सारे प्रयत्न उसी प्रश्न का उत्तर पाने की दिशा में चल रहे थे।

उस प्रश्न का बीज विक्रम संवत् २०१२ के उज्जैन चातुर्मास में बोया गया था। वहाँ आचार्यश्री के मन में साधना विषयक नए उन्मेष लाने की बात आई। 'कुशल-साधना'–इस नाम से कुछ अभ्यास-सूत्र निर्धारित किए गए और साधु-साध्वियों ने उनका अभ्यास शुरू किया। साधना के क्षेत्र में यह एक प्रथम रश्मि थी। उससे बहुत नहीं, फिर भी कुछ आलोक अवश्य मिला। उसके पश्चात् अनेक छोटे-छोटे प्रयत्न चलते रहे। वि०सं० २०२० की सर्दियों में मर्यादा महोत्सव के अवसर पर 'प्रणिधान कक्ष' का प्रयोग किया गया। उस दस दिवसीय साधना सत्र में काफी बड़ी संख्या में साधु-साध्वियों ने भाग लिया। उसमें 'जैन योग' पर काफी चर्चा हुई। भावक्रिया के विशेष प्रयोग किए गए। उस चर्चा का संक्षिप्त संकलन 'तुम अनंत शक्ति के स्रोत हो' पुस्तक में प्राप्त है।

कई शताब्दियों से पहले विच्छिन्न ध्यान-परंपरा की खोज के लिए ये सभी प्रयत्न पर्याप्त सिद्ध नहीं हुए। जैसे-जैसे कुछ रहस्य समझ में आते गए, वैसे-वैसे प्रयत्न को तीव्र करने की आवश्यकता अनुभव होती गई। वि०सं० २०२६ में लाडनूं में एकमासीय साधना-सत्र का आयोजन किया गया। उसके बाद चूरू, राजगढ़, हिसार और दिल्ली–इन चारों स्थानों में दस-दस दिवसीय साधना-सत्र आयोजित किए गए। ये सभी साधना-सत्र 'तुलसी अध्यात्म नीड़म्' जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में और आचार्य तुलसी के साहित्य में संपन्न हुए। इन शिविरों ने साधना का पुष्ट वातावरण निर्मित किया। अनेक साधु-साध्वियाँ तथा गृहस्थ ध्यानसाधना में रुचि लेने लगे। अनेक साधु-साध्वियाँ इस विषय में विशेष अभ्यास और प्रयोग भी करने लगे।

इन बहु-आयामी प्रयत्नों के द्वारा भावक्रिया, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा, भावना–ये विषय उत्तरोत्तर स्पष्ट होते हुए, किंतु ध्यान का विषय उतना स्पष्ट नहीं हुआ जितना कि होना चाहिए था। ध्यान के सूत्र हाथ लगे पर उनका अर्थ हाथ नहीं लगा। गुरुमुख से जो अर्थ समझाया जाता था। जो पद्धति सिखाई जाती थी, वह प्राप्त नहीं हो सकी। वि०सं० २०२८ के लाडनूं चातुर्मास में मैंने आचारांग का अनुवाद प्रारंभ किया। उसके ध्यान सूत्रों की ओर दृष्टि आकर्षित हुई। वह सूत्रात्मक शैली में लिखा हुआ आगम है। उसमें ध्यान के सूत्र पकड़ में आए, किंतु उनकी अभ्यास-पद्धति परंपरा के अभाव में कैसे पकड़ी जा सकती थी? महर्षि पतंजलि के 'योगसूत्र और बौद्धों के 'विशुद्धिमग्ग' के आलोक में आचारांग के 'ध्यानसूत्रों की अभ्यास-पद्धति को समझने का प्रयत्न किया गया और उसमें कुछ सफलता मिली। वि०सं० २०३१ में 'अध्यात्म साधना केंद्र' दिल्ली में सत्यनारायणजी गोयनका ने 'विपश्यना ध्यान शिविर' का आयोजन किया। उसमें अनेक साधु-साध्वियों ने भाग लिया। मैं भी उसमें सम्मिलित था। उस शिविर में हम लोग 'आनापानसती' और 'विपश्यना' का प्रयोग कर रहे थे। मैं प्रयोग के साथ-साथ अपने प्रश्न का समाधान भी खोज रहा था और उससे कुछ समाधान मिला भी। जैन और बौद्ध–दोनों एक ही श्रमण परंपरा के अंग हैं। भगवान् महावीर और भगवान् बुद्ध–दोनों सम-सामयिक हैं। दोनों की ध्यान पद्धति में साम्य है। राग-द्वेष के मल को क्षीण कर चित्त को निर्मल बनाना और चैतसिक निर्मलता के द्वारा चेतना को जागृत करना, दोनों परंपराओं को इष्ट है। बौद्ध परंपरा में ध्यान शाखा का अस्तित्व उपदेश शाखा से स्वतंत्र रहा, इसलिए उसमें ध्यान के अभ्यास की पद्धति अविच्छिन्न रूप में चलती रही। जैन परंपरा में ध्यान की कोई स्वतंत्र शाखा नहीं रही, इसलिए उसके ध्यानसूत्रों की अभ्यास-पद्धति विच्छिन्न हो गई। उस विच्छिन्न अभ्यास-पद्धति को समझने में विपश्यना ध्यान का प्रयोग बहुत सहायक सिद्ध हुआ। गोयनका जी जैसे साधना-सिद्ध, उदारमना और ऋजु-प्रकृति के व्यक्ति से विपश्यना के रहस्यों को समझने में और अधिक सहायता मिली। उसी वर्ष (वि०सं० २०३१) लाडनूं में तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में फिर बीस दिवसीय विपश्यना ध्यान शिविर आयोजित किया गया। उसमें सौ से अधिक साधु-साध्वियाँ सम्मिलित थीं। बीस दिन के निरंतर अभ्यास से जहाँ विपश्यना की गहराई में उतरने का अवसर मिला, वहाँ उसके अंतस्थल की गहराई को समझने का भी मौका मिला। जैन परंपरा के ध्यान-सूत्रों की अभ्यास पद्धति और अधिक स्पष्ट हो गई। हमने साधना की सभी पद्धतियों–हठयोग, तंत्रशास्त्र, शैव, शाक्त, राजयोग आदि का अनुशीलन किया और उनसे लाभ भी उठाया, किंतु उनके शिविरकालीन अभ्यास में सम्मिलित होने का अवसर नहीं मिला। ध्यान का रहस्य सिद्धांत से नहीं समझा जा सकता, वह अभ्यास से समझा जा सकता है।

वि०सं० २०३२ जयपुर चातुर्मास में जैन परंपरागत ध्यान का अभ्यास-क्रम निश्चित करने का संकल्प हुआ। हम लोग आचार्यश्री के उपपात में बैठे और संकल्पपूर्ति का उपक्रम शुरू हुआ। हमने ध्यान की इस अभ्यास-विधि का नामकरण 'प्रेक्षाध्यान' किया। इसकी पाँच भूमिकाएँ निर्धारित की गई। यह 'प्रेक्षाध्यान-पद्धति' के विकास का संक्षिप्त इतिहास है।

प्रे क्षा

प्रेक्षा शब्द ईक्ष् धातु से बना है। इसका अर्थ है–देखना। प्र+ईक्षा = प्रेक्षा, इसका अर्थ है–गहराई में उतरकर देखना। विपश्यना का भी यही अर्थ है। जैन साहित्य में प्रेक्षा और विपश्यना–ये दोनों शब्द प्रयुक्त हैं। प्रेक्षाध्यान और विपश्यना ध्यान–ये दोनों शब्द इस ध्यान-पद्धति के लिए प्रयुक्त किए जा सकते थे, किंतु 'विपश्यना-ध्यान' इस नाम से बौद्धों की ध्यान-पद्धति प्रचलित है। इसलिए 'प्रेक्षाध्यान' इस नाम का चुनाव किया गया। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है–'संपिक्खए अप्पगमप्पएणं'–'आत्मा के द्वारा आत्मा की संप्रेक्षा करो, मन के द्वारा सूक्ष्म मन को देखो, स्थूल चेतना के द्वारा सूक्ष्म चेतना को देखो। 'देखना' ध्यान का मूल तत्त्व है। इसीलिए इस ध्यान-पद्धति का नाम 'प्रेक्षाध्यान' रखा गया है।

जानना और देखना चेतना का लक्षण है। आवृत चेतना में जानने और देखने की क्षमता क्षीण हो जाती है। उस क्षमता को विकसित करने का सूत्र है–जानो और देखो। भगवान् महावीर ने साधना के जो सूत्र दिए हैं, उनमें 'जानो और देखो' यही मुख्य है। 'चिंतन, विचार या पर्यालोचन करो'–यह बहुत गौण और बहुत प्रारंभिक है। यह साधना के क्षेत्र में बहुत आगे नहीं ले जाता।

भगवान् महावीर ने बार-बार कहा–जानो और देखो। आचारांग सूत्र इसका साक्ष्य है। महावीर कहते हैं–'हे आर्य! तू जन्म और वृद्धि के क्रम को देख। जो क्रोध को देखता है, वह मान को देखता है। जो मान को देखता है, वह माया को देखता है। जो माया को देखता है, वह लोभ को देखता है। जो लोभ को देखता है, वह प्रिय को देखता है। जो प्रिय को देखता है, वह अप्रिय को देखता है। जो अप्रिय को देखता है, वह मोह को देखता है। जो मोह को देखता है, वह गर्भ को देखता है। जो गर्भ को देखता है, वह जन्म को देखता है, जो जन्म को देखता है, वह मृत्यु को देखता है। जो मृत्यु को देखता है, वह नरक और तिर्यंच को देखता है। जो नरक और तिर्यंय को देखता है, वह दुःख को देखता है। जो दुःख को देखता है वह क्रोध से लेकर दुःख पर्यन्त होने वाले इस चक्रव्यूह को तोड़ देता है। 'यह निरावरण द्रष्टा का दर्शन है।' 'तू देख यह लोक चारों ओर प्रकंपित हो रहा है।' ऊपर स्रोत हैं, नीचे स्रोत हैं और मध्य में स्रोत हैं। उन्हें तुम देखो। महान् साधक अकर्म (ध्यानस्थ–मन, वचन और शरीर की क्रिया का निरोध कर) होकर जानता-देखता है। जो देखता है उसके लिए कोई उपदेश नहीं होता। जो देखता है उसके कोई उपाधि होती है या नहीं होती? उत्तर मिला–नहीं होती।

उक्त कुछ सूत्रों से देखने और जानने की बात समझ में आ सकती है। देखना साधक का सबसे बड़ा सूत्र है। जब हम देखते हैं तब सोचते नहीं हैं और जब हम सोचते हैं तब देखते नहीं हैं। विचारों का जो सिलसिला चलता है, उसे रोकने का सबसे पहला और सबसे अंतिम साधन है–देखना। कल्पना के चक्रव्यूह को तोड़ने का सबसे सशक्त उपाय है–देखना। आप स्थिर होकर अनिमेष चक्षु से किसी वस्तु को देखें, विचार समाप्त हो जाएँगे, विकल्प शून्य हो जाएँगे। आप स्थिर होकर अपने भीतर देखें–अपने विचारों को देखें या शरीर के प्रकंपनों को देखें तो आप पाएँगे कि विचार स्थगित हैं और विकल्प शून्य हैं। भीतर की गहराइयों को देखते-देखते सूक्ष्म शरीर को देखने लगेंगे। जो भीतरी सत्य को देख लेता है, उसमें बाहरी सत्य को देखने की क्षमता अपने आप आ जाती है।

देखना वह है, जहाँ केवल चैतन्य सक्रिय होता है। जहाँ प्रियता और अप्रियता का भाव आ जाए, राग और द्वेष उभर जाएँ वहाँ देखना गौण हो जाता है। यही बात जानने पर लागू होती है।

हम पहले देखते हैं, फिर जानते हैं। इसे इस भाषा में स्पष्ट किया जा सकता है कि हम जैसे-जैसे देखते जाते हैं, वैसे-वैसे जानते चले जाते हैं। मन से देखने को 'पश्यत्ता' (पासणया) कहा गया है। इंद्रिय-संवेदन से शून्य चैतन्य का उपयोग देखना और जानना है।

जो पश्यक–द्रष्टा है, उसका दृश्य के प्रति दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

भगवान् महावीर ऊँचे, नीचे और मध्य में प्रेक्षा करते हुए समाधि को प्राप्त हो जाते थे। उक्त चर्चा के संदर्भ में प्रेक्षाध्यान का मूल्यांकन किया जा सकता है।

माध्यस्थ्य या तटस्थता प्रेक्षा का ही दूसरा रूप है। जो देखता है वह सम रहता है। वह प्रिय के प्रति राग-रंजित नहीं होता और अप्रिय के प्रति द्वेषपूर्ण नहीं होता। वह प्रिय और अप्रिय दोनों की उपेक्षा करता है–दोनों को निकटता से देखता है। और उन्हें निकटता से देखता है इसीलिए वह उनके प्रति सम, मध्यस्थ या तटस्थ रह सकता है। उपेक्षा या मध्यस्थता को प्रेक्षा से पृथक् नहीं किया जा सकता। 'जो इस महान् लोक की उपेक्षा करता है–उसे निकटता से देखता है, वह अप्रमत्त विहार कर सकता है।

चक्षु दृश्य को देखता है पर उसे न निर्मित करता है और न उसका फल-भोग करता है। वह अकारक और अवेदक है। इसी प्रकार चैतन्य भी अकारक और अवेदक है। ज्ञानी जब केवल जानता या देखता है, तब न वह कर्मबंध करता है और न विपाक में आए हुए कर्म का वेदन करता है। जिसे केवल जानने या देखने का अभ्यास उपलब्ध हो जाता है, वह व्याधि या अन्य आगंतुक कष्ट को देख लेता है, जान लेता है, पर उसके साथ तादात्म्य का अनुभव नहीं करता। इस वेदना की प्रेक्षा से कष्ट की अनुभूति ही कम नहीं होती किंतु कर्म के बंध, सत्ता उदय और निर्जरा को देखने की क्षमता भी विकसित हो जाती है। (क्रमशः)

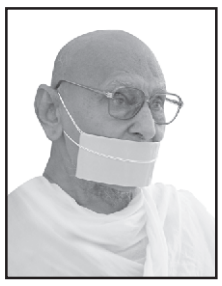

संबोधि

: आचार्य महाप्रज्ञ :

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(३८) हिंसासूतानि दुःखानि, भयवैरकराणि च।
पश्य-व्याहृतमीक्षस्व, मोहेनाऽपश्यदर्शन!

हिंसा से दुःख उत्पन्न होते हैं। वे भय और वैर की वृद्धि करते हैं। मोह के द्वारा अपश्य-दर्शन-अद्रष्टा बना हुआ पुरुष! तू पश्य-द्रष्टा की वाणी को देख।

हिंसा का अर्थ है-असत् प्रवृत्ति। वह मानसिक, वाचिक और कायिक-तीन प्रकार की होती है। जब आत्मा असत् प्रवृत्ति में प्रवृत्त होती है, तब अशुभ कर्म-बंध होता है और अशुभ कर्म सभी दुःखों के मूल हैं। अतः हिंसा सभी दुःखों की उत्पादक शक्ति है। इससे भय और वैर बढ़ते रहते हैं। अभय वह है जो अहिंसक है। अहिंसा वैर का उपशमन करती है।

(३९) धर्मप्रज्ञापनं यो हि, व्यत्ययेनाध्यवस्यति।
हिंसया मन्यते शातिं, स जनो मूढ उच्यते।।

जो धर्म के निरूपण को विपरीत रूप से ग्रहण करता है और हिंसा से शांति होगी, समस्या का समाधान होगा, ऐसा मानता है, वह मनुष्य मूढ कहलाता है।

हिंसा से शांति नहीं, शस्त्रों का निर्माण होता है। अहिंसा की आत्मा को जानने वाला व्यक्ति ही हिंसा का नाश कर सकता है। हिंसा की आग कभी हिंसा से बुझ नहीं सकती। संभूम चक्रवर्ती ने ब्राह्मण से वैर लेने के लिए पृथ्वी को ब्राह्मण-हीन कर दिया तो परशुराम ने इक्कीस बार उसे क्षत्रियहीन बनाया। हिंसा प्रतिशोध को जन्म देती है। विवेकवान् व्यक्ति अहिंसा में शांति देखता है, आत्म-स्वभाव की समुपासना में धर्म को देखता है।

(४०) असारे नाम संसारे, सारं सत्यं हि केवलम्।
तत्पश्यन्तो हि पश्यन्ति, न पश्यन्ति परे जनाः।।

इस सारहीन संसार में केवल सत्य ही सार है। जो द्रष्टा हैं, वे ही सत्य को देखते हैं। जो द्रष्टा नहीं हैं, वे सत्य को नहीं देख पाते।

भगवान ने कहा-'सच्चं लोगम्मि सारभूयं-लोक में सत्य ही सारभूत है। सत्य क्या है? इसका उत्तर यही है कि जो वीतराग द्वारा कथित है, वही सत्य है। इसको समझना ही अपने आपको समझना है। जो व्यक्ति सत्य को देखता है वही आत्म-द्रष्टा हो सकता है। जो सत्य को नहीं देखता वह कुछ भी नहीं देखता।

सत्य विराट् है। सत्य भगवान् है। सत्य असीम है। इसको परिभाषा में बाँधना सहज-सरल नहीं है।

(क्रमशः)

अवबोध

: मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' :

कर्म बोध

अवस्था व समवाय

प्रश्न १३ : क्या उदय के बिना बंधे हुए कर्म फल देते हैं?

उत्तर : उदय के बिना बंधे हुए कर्म फल नहीं दे सकते। फल देने की अवस्था मात्र उदयकाल ही है। उसी समय वे जीव को सुख-दुःख का अनुभव करवाते हैं।

प्रश्न १४ : क्या कर्मफल व ग्रहफल एक हैं?

उत्तर : कर्मफल स्वकृत कर्मों का फल है। ग्रहफल जीवन में होने वाली शुभ-अशुभ घटनाओं की भविष्यवाणी करने व कर्मों के प्रदेशोदय, विपाकोदय में माध्यम बनते हैं। ग्रहफल ज्योतिष-शास्त्र का विषय है। जैन मतानुसार शुभ-अशुभ घटनाएँ कर्मजन्य हैं। ग्रह उनकी अवगति में सहायक बनते हैं और कर्मफल के विपाकोदय की भूमिका निर्मित करते हैं।

प्रश्न १५ : उदीरणा किसे कहते हैं?

उत्तर : उदय में आने वाले कर्म दलिकों (समूह) को निर्धारित अवधि से पूर्व प्रयत्न विशेष से पहले उदय में लाने को उदीरणा से पूर्व अपवर्तन जरूरी होता है। कर्मों की स्थिति कम होने से वे शीघ्र उदय प्राप्त दलिकों के साथ भोग लिए जाते हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

: आचार्य महाश्रमण :

जैन जीवनशैली

अणुव्रत

अणुव्रत : आचार संहिता

(१) मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।
- आत्म-हत्या नहीं करूँगा।
- भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

(२) मैं आक्रमण नहीं करूँगा।
- आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा।
- विश्व-शांति तथा निःशस्त्रीकरण के लिए प्रयत्न करूँगा।

(३) मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

(४) मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा।
- जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।
- अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

(५) मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।
- सांप्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

(६) मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।
- अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा।
- छलनापूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

(७) मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

(८) मैं चुनाव के संबंध में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

(९) मैं सामाजिक कुरूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

(१०) मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा।
- मादक तथा नशीले पदार्थों-शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तंबाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

(११) मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
- हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
- पानी का अपव्यय नहीं करूँगा।

(अणुव्रती के लिए संबंधित वर्गीय अणुव्रतों का पालन अनिवार्य है।)

प्रेक्षाध्यान

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का एक लोकप्रिय शब्द है-ध्यान। ध्यान क्या? क्यों? और कैसे? इन प्रश्नों को समाहित किए बिना ध्यान का स्वरूप, उद्देश्य और उसकी पद्धति का बोध नहीं हो सकता। जब तक यह बोध नहीं होगा, ध्यान के प्रति रुचि नहीं जागेगी। रुचि बिना प्रयोग नहीं होगा और प्रयोग के बिना किसी निष्पत्ति की आशा कैसे की जा सकती है?

विकेन्द्रित विचारों को केंद्रित करने का नाम ध्यान है। दूसरे शब्दों में मानसिक एकाग्रता ध्यान है। ध्यान प्रवृत्ति से निवृत्ति की दिशा में प्रस्थान है। जो लोग केवल प्रवृत्ति का ही मूल्यांकन करते हैं, वे ध्यान का महत्त्व नहीं समझ सकते। संसारी प्राणी को प्रवृत्ति करनी होती है। प्रवृत्ति किए बिना वह रह नहीं सकता। जीने के लिए प्रवृत्ति की अनिवार्यता है। मनुष्य के लिए जितना आवश्यक है, जीवन की परम सच्चाई को समझना और पाना भी उतना ही आवश्यक है, इसके लिए निवृत्ति की अपेक्षा है। निवृत्ति के बिना न तो प्रवृत्ति का परिष्कार हो सकता है और न सत्य का साक्षात्कार हो सकता है। ध्यान निवृत्ति की दिशा में उठा हुआ एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस दिशा में जितनी गति होगी, उतनी ही सच्चाई प्रकट होगी।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 सितम्बर - 10 सितम्बर 2023

✦ जब चेतना विशुद्ध हो जाती है तो वह समस्त दुःखों से मुक्त होकर मोक्ष में अवस्थित हो जाती है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

जैन विश्व भारती द्वारा आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में समण संस्कृति संकाय के २३वें दीक्षान्त समारोह का भव्य आयोजन

नन्दनवन मुम्बई

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती द्वारा समण संस्कृति संकाय का दीक्षांत समारोह २२ से २४ अगस्त २०२३ को नंदनवन मुंबई में आयोजित हुआ। देश-विदेश के लगभग २२० क्षेत्रों से ५२५ व्यक्ति इसमें संभागी बने।

२२ अगस्त का मध्यान्ह सत्र जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी के दिशा निर्देशन में कार्यकर्ता सम्मेलन से आगाज हुआ। कार्यकर्ताओं को उत्साहित करते हुए मुनिश्री ने टेक्नोलॉजी युग में इसका पूरा-पूरा उपयोग करते हुए जैन विद्या को घर-घर पहुंचाने एवं अधिक परीक्षार्थी तैयार करने की प्रेरणा दी। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ एवं महामंत्री सलिल लोढ़ा ने कार्यकर्ताओं का वर्ष में एक बार लाडनूं में निःशुल्क प्रेक्षाध्यान शिविर आदि अनेक घोषणाओं से उत्साहवर्धन किया। जैन विश्व भारती सहसंयोजिका प्रेमलता सिसोदिया एवं सम्यक् दर्शन कार्यशाला सहसंयोजक राजेश दूगड़ आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

रात्रिकालीन सत्र में कार्यकर्ताओं का सम्मान, जिज्ञासा, मोटिवेशन आदि का बहुत सुंदर कार्यक्रम आयोजित हुआ। उमेश सेठिया ने संबोधि ऐप के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

२३ अगस्त के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में 'उत्तराध्ययन' आगम पर आधारित आगम मंथन प्रतियोगिता की प्रश्न पुस्तिका का विमोचन आचार्यवर के सान्निध्य में हुआ। प्रवचन के पश्चात परम पूज्य गुरुदेव की सेवा का अवसर संकाय परिवार को मिला। जैन विश्व भारती के महामंत्री सलिल लोढ़ा, जैन विद्या संयोजक डॉ॰ विजय संचेती, सम्यक् दर्शन कार्यशाला संयोजक पुखराज डागा, आगम मंथन सहसंयोजिका मंगला कुंडलिया, ऑनलाइन स्वाध्याय सहसंयोजक राजेन्द्र बैंगानी, साहित्य मंथन प्रतियोगिता सहसंयोजिका प्रेम सेखानी ने समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित अलग-अलग गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। मुनि कीर्तिकुमारजी ने जैन विश्व भारती परिसर में जैन विद्या कार्यशाला का प्रतिमाह आवासीय आयोजन कराने की स्वीकृति प्रदान कराने हेतु आचार्यप्रवर से निवेदन किया। परम पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि जैन विश्व भारती के नाम को समण संस्कृति संकाय मानो अच्छे रूप में सार्थक करने वाला आयाम है। जैन विद्या का ज्ञान एवं साहित्य का अच्छा प्रचार-प्रसार का कार्य समण संस्कृति संकाय के द्वारा किया जा रहा है।

मध्यान्ह का सत्र चारित्रात्माओं के उद्बोधन एवं प्रेरणा का सत्र रहा। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने वात्सल्यपूर्ण उद्बोधन में अनेकों प्रेरणाएं प्रदान की, जिसमें मुख्यतः विज्ञ उपाधि प्राप्त करने वाले को आगे अन्य जैनोलॉजी के कोर्स एवं जैन विद्या का अध्यापन कराने के लिये प्रेरणा प्रदान की। मुनि कीर्तिकुमारजी ने संकाय के सभी आयामों की ओर गति देने एवं उपयोग करने के लिए कहा। मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने आगम मंथन प्रतियोगिता की उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताया। मुनि अभिजीतकुमारजी एवं मुनि जागृतकुमारजी ने सम्यक् दर्शन कार्यशाला के अंतर्गत आचार्यप्रवर के साहित्य को पढ़ने एवं सम्यक् दर्शन के बारे में विस्तार से बताया। रात्रिकालीन सत्र में जैन विद्या से समायुक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अनेकों प्रतिभाशाली कार्यकर्ताओं एवं प्रतिभागियों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

दीक्षांत समारोह का मुख्य कार्यक्रम मध्यान्ह में परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में आयोजित किया गया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़, नवरतन बच्छावत एवं धर्मेन्द्र महनोत ने अपने विचार प्रस्तुत किए। देश-विदेश से समागत २२० विज्ञ उपाधि धारक, ३६ जैन विद्या वरीयता प्राप्त, ३४ सम्यक् दर्शन कार्यशाला टॉपर, १५ आगम मंथन प्रतियोगिता विजेता एवं ०४ साहित्य मंथन प्रतियोगिता विजेता को परम पूज्य गुरुदेव के सम्मुख गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मोमेंटो से सम्मानित किया गया। कीर्ति बेंगानी, संगीता चपलोत एवं तरूणा बोहरा ने संचालन का दायित्व निभाया। पुखराज डागा ने पूज्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। पूज्यवर ने जैन विद्या को और विस्तार देने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

त्रिदिवसीय दीक्षांत समारोह का समापन संकाय विभागाध्यक्ष मालचंद बेंगानी एवं दीक्षांत समारोह संयोजक प्रवीण सुराणा के द्वारा कार्यकर्ताओं विशेषतः प्रेमलता सिसोदिया, विमला डागलिया, रमेश डागलिया आदि को साधुवाद देकर किया गया। परम पूज्य गुरुदेव ने फरमाया कि जैन विश्व भारती का समण संस्कृति का यह आयाम एक व्यापक आयाम है।

द पावर ऑफ रेसिलियंस कार्यशाला के विविध आयोजन

कोयम्बटूर

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल कोयम्बटूर द्वारा 'द पावर ऑफ रेसिलियंस कार्यशाला' का आयोजन अभातेममं महामंत्री मधु देरासरिया की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से की गई। तेरांपथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजू सेठिया ने आगंतुकों का स्वागत किया। मंडल की बहिनों ने स्वागत गीतिका प्रस्तुत की। निवर्तमान अध्यक्ष मंजू गिड़िया व पूर्वाध्यक्ष मधु बांठिया ने स्वागत करते हुए अपने भाव प्रस्तुत किये। उपमंत्री मधु चोरड़िया ने महामंत्री का परिचय दिया।

महामंत्री मधु देरासरिया ने बहुत ही सरल भाषा में रेसिलियंस का अर्थ समझाते हुए कहा कि सुख और दुख जीवन के दो पहलू हैं, कठिनाई के समय आत्मबल एवं सकारात्मक सोच के साथ कोई भी कार्य करें तो दुख की घड़ी निकल जाती है। इस कार्यशाला में बहिनों की उपस्थिति अच्छी रही। महामंत्री का सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन मंडल की सहमंत्री ममता पुगलिया ने दिया एवं कार्यशाला का कुशल संचालन अभातेममं कार्यसमिति सदस्य एवं तेममं कोयम्बटूर उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने किया।

टिटिलागढ़

तेरापंथ महिला मंडल, टिटिलागढ़ ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार द पावर ऑफ रेसिलियंस कार्यशाला का आयोजन किया गया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यशाला की शुरुआत की गई। मंगलाचरण महिला मंडल की मंत्री दीपिका जैन ने किया। अध्यक्षा बबीता जैन ने सभी का स्वागत किया और अपने विचार रखते हुए उन्होंने रेसिलियंस का मतलब विस्तार से समझाया। आज के कार्यक्रम की मुख्य वक्ता ब्रह्मकुमारी प्रीतिजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए नारी को सर्वशक्तिमान एवं ऊर्जा से भरी हुई बतलाया। उन्होंने कहा कि आप जैसा सोचेंगे वैसे ही बन जाएंगे। आप अपने विचारों को पॉजिटिव रखें।

यदि आपमें नेगेटिविटी अधिक है तो आप अपने सही विचारों के द्वारा नेगेटिव को पॉजिटिव में बदल सकते हैं। कृष्णा जैन एवं सरोज जैन ने भी अपने विचार रखे। अतिथि एवं मुख्य वक्ता ब्रह्माकुमारी प्रीतिजी को शॉल एवं साहित्य भेंट कर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में नई सदस्य बहिनों का भी स्वागत किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन और आभार ज्ञापन खुशबू जैन ने किया।

छोटी खाटू

साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में तेरांपथ महिला मंडल द्वारा द पावर ऑफ रेसिलियंस कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'कैसे जगे महिलाओं में आत्मविश्वास' विषय पर आयोजित कार्यशाला का मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा किया गया। साध्वी संघप्रभाजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि अपनी अनंत क्षमताओं से युग की तस्वीर बदलने वाली घर परिवार और समाज को एक सूत्र में बांधकर रखने वाली ऊर्जस्वल ताकत का नाम है- नारी। अपेक्षा है महिलाएं नियमित ध्यान एवं योग के प्रयोग के द्वारा समय एवं शक्ति का सम्यक नियोजन कर आत्मविश्वास को जगाएं।

साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में कॉन्फिडेंस शब्द का अर्थ बताते हुए आत्मविश्वास जगाने के अनेक गुर बताए। साध्वी प्राज्ञप्रभाजी ने 'जागे प्रबल आत्मविश्वास' सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। मुख्य वक्ता अनिता शर्मा ने विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। प्रस्तुति के क्रम में विकास सेठिया एवं कपूरचंद बेताला ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन पूजा सेठिया ने किया। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्वेता भंडारी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सी. पी. एस. कार्यशाला का विधिवत शुभारंभ

तेयुप पर्वत पाटिया

साध्वी हिमश्रीजी के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के महत्वपूर्ण आयाम सीपीएस कार्यशाला का शुभारम्भ राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वितीय जयेश मेहता की अध्यक्षता में हुआ।

इस कार्यक्रम में सीपीएस के राष्ट्रीय सहप्रभारी कुलदीप कोठारी, प्रशिक्षक रमेश भंसाली, तेरापंथी सभा अध्यक्ष गौतम ढ़ेलड़िया व उनकी टीम, तेयुप अध्यक्ष दिलीप चावत व उनकी पूरी टीम की विशेष सहभागिता रही।

प्रथम पृष्ठ का शेष...

जैन विद्या परीक्षा...

सिद्धों में तो चार आत्मा ही होती है- द्रव्य आत्मा, उपयोग आत्मा, ज्ञान आत्मा और दर्शन आत्मा। आठ आत्माओं में कषाय आत्मा तो छोड़ने की ही है। चारित्रात्मा सम्यक् दर्शन आत्मा मेरी पुष्ट रहे। हम वीर्य शक्ति का सदुपयोग करें। अलग-अलग जीवों में अलग-अलग आत्माएं हो सकती है। पूज्यवर ने कालूयशोविलास की विवेचना कराते हुए पूज्य कालूगणी एवं भावी युवाचार्य के बीच हुए वार्तालाप के प्रसंग को व्याख्यायित किया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि मनुष्य के पास व्यक्त भाषा होती है। बोलना एक बात है, कलापूर्ण बोलना अलग बात है। हम वाणी का सदुपयोग करें। दूसरों के गुणगान करें। प्रमोद भावना से मन प्रसन्न रहता है। वाणी अमूल्य रतन है। हम सुभाषित वाणी का उपयोग करें।

दीक्षांत समारोह के तीसरे दिन आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में उसका मंचीय उपक्रम हुआ। जैन विश्व भारती व समण संस्कृति संकाय के पदाधिकारियों द्वारा गीत की प्रस्तुति की गई। समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष मालचंद बेंगानी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी ने संकाय को एक परिवार की तरह बताया जो आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार एवं ज्ञानार्जन में लगा हुआ है। पूज्यवर ने सिद्धि तप में साधनारत पुष्पा भण्डारी एवं अन्य तपस्वियों को तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जन्मदाता शक्ति का शिवालय और ममता का महालय

सिकन्दराबाद

तेरापंथ भवन, सिकन्दराबाद में रविवारीय विशेष पारिवारिक कार्यशाला 'महिमा जन्म दाता की' के श्रवण हेतु उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ॰ मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- 'जैन आगम साहित्य में उल्लेख मिलता है- माता-पिता, भर्ता यानि पोषक और धर्माचार्य -इन तीन उपकारकों का ऋण कभी चुकाया नहीं जा सकता। प्रासंगिक विषय 'महिमा जन्मदाता की' के संदर्भ में उन्होंने कहा- संसार में प्रथम संबंध माता-पिता के साथ होता है। जन्मदाता-शक्ति का शिवालय, वात्सल्य का देवालय और ममता का महालय होता है, जो संतान के लिए सब कुछ सौंप देते हैं। जन्मदाता परिवार रूपी बगीचे को सिंचन और छांव देकर पवित्र संरक्षक की भूमिका निभाते हैं। जन्मदाता ऐसे होते हैं जो अपने स्वप्नों की परवाह किए बिना अपने संतान का हर स्वप्न पूरा करने का प्रयास करते हैं।'

साध्वीश्रीजी ने उपस्थित परिषद् को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि ममता के सागर को भूले नहीं। यदि कृतज्ञ न बनें तो क्रूर भी न बनें। जिंदगी भर मां-बाप आपके लिए ए.टी.एम. कार्ड बने रहे, कम से कम बुढ़ापे में आप आधार कार्ड अवश्य बनें। उनकी उपेक्षा न करें। उनका सहारा बनने की बजाय, भारभूत मानना मानवीय अपराध है। आवश्यकता है सम्पूर्ण जैन समाज अपने परिवारों में सद्संस्कारों का बीजारोपण करें। साध्वी डॉ. चैतन्यप्रभाजी के पार्श्व स्तवन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। गायक युगल नवीन एवं नवनीत छाजेड़ ने मधुर भावपूर्ण संगान किया। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों ने लघु नाटिका का सुन्दर प्रदर्शन किया। साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में 'जन्मदाता की महिमा क्या गाएँ' गीत का संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा ने मंच संचालन किया।

मासखमण तप संपूर्ति अभिनंदन समारोह

तिरूपुर

साध्वीश्री डॉ॰ गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में उपासिका संजू दुगड़ का मासखमण तप अभिनंदन समारोह मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्रीजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया।

महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गई। तेरापंथी सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने सभी का स्वागत किया एवं तपस्विनी बहिन के तप की अनुमोदना की। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेश का वाचन राजेंद्र शेखावत ने किया।

पारिवारिकजनों ने गीतिका के माध्यम से तपस्विनी बहिन का तपोभिनंदन किया। प्रकाश दूगड़ ने अपने भावोद्गार व्यक्त किए। महासभा उपाध्यक्ष नरेंद्र नखत ने उपासिका संजू दुगड़ की तपस्या का अनुमोदन किया। तेमम अध्यक्ष नीता सिंघवी एवं तेयुप अध्यक्ष सोनू डागा ने तप की अनुमोदना की। साध्वी गुप्तिप्रभाजी द्वारा रचित तप अभिनंदन गीतिका की प्रस्तुति संतोष आंचलिया द्वारा दी गई। उपासक प्राध्यापक डालमचंद नौलखा के भावों की अभिव्यक्ति विनोद बांठिया द्वारा दी गई। उपासिका मधु कोठारी ने उपासिका बहन के तप अभिनंदन में गीत के स्वर उकेरे। महिला मंडल सदस्यगण प्रीति भंडारी, रेखा सिंघवी, नीता सिंघवी ने तप अभिनंदन पर शानदार नाटिका की प्रस्तुति दी।

डॉ॰ साध्वी गवेषणाश्रीजी ने फरमाया- 'जिसका संकल्प बल मजबूत होता है वही तप के समरांगण में युद्ध कर सकता है। तप-कर्म-निर्जरण की दिशा में प्रयाण व मोक्षाभिमुख होने का अभियान है। तपस्या प्रदर्शन, प्रलोभन नहीं जीवन का नंदनवन है। आज उपासिका संजू दुगड़ ने मासखमण की तपस्या करके दुगड़ परिवार का गौरव बढ़ाया है। काफी असाता होने के बावजूद दृढ़ संकल्प का परिचय दिया है।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि तपस्या इहलोक, परलोक, कीर्ति, यश, वर्ण आदि के लिए नहीं निर्जरा के लिए करनी चाहिए। साध्वी दक्षप्रभाजी ने तपस्वी की जयजयकार भावपूर्ण गीतिका प्रस्तुत करके तपस्वी के तप की अनुमोदना की। साध्वी मेरुप्रभाजी ने संचालन करते हुए कहा कि आत्मोत्थान के लिए तप की जरूरत है।

तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष विजय मालू एवं प्रभात बोथरा ने तप अभिनंदन पत्र का वाचन किया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेश पत्र को उपासक हनुमानमलजी दुगड़, तेरापंथी सभा कोयंबटूर अध्यक्ष उत्तमचंद पुगलिया आदि वरिष्ठ श्रावकों द्वारा भेंट किया गया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा मंत्री मनोज भंसाली ने किया।

दिल्ली

विद्या देवी डागा के मासखमण तप (२६ दिन) का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि से रखा गया। संस्कारक प्रकाश सुराणा द्वारा मंगलभावना यंत्र की संक्षिप्त जानकारी व संस्कारकों का परिचय व जैन संस्कार विधि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। संस्कारक अशोक सिंघी ने तपस्विनी बहन के तप की अनुमोदना करते हुए तेयुप दिल्ली की तरफ से बधाई संदेश का वाचन किया व साथ ही तेयुप दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापन भी किया।

तपोनिष्ठ श्रावक पारसमल बोथरा ने ४४ की तपस्या का पारणा पहले विद्या बाई को करवाया उसके बाद स्वयं पारणा किया। दिशा व दृष्टि लोढ़ा बहनों द्वारा सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की गई। डागा परिवार की तरफ से पुखराज डागा ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तपस्विनी बहन विद्या देवी डागा मुनिश्री नमनकुमारजी की संसारपक्षीय बड़ी मम्मी व मुनि पार्श्वकुमारजी की संसारपक्षीय मातुश्री है।

अहमदाबाद

कुसुम देवी पत्नी संचियालाल गधैया के मासखमण की तपस्या का पारणा जैन संस्कार विधि से करवाया गया। तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि संस्कारक विक्रम दुगड़ एवं नानालाल कोठारी ने विविध संकल्पों, सम्पूर्ण विधि से संपन्न करवाया एवं मंगल भावना यंत्र आदि के बारे में विस्तार से समझाया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक नानालाल कोठारी ने किया। कार्यक्रम में तेयुप अहमदाबाद कार्यसमिति सदस्य रवि बालर की उपस्थिति रही।

महत्वपूर्ण सूचना

सभी सभा-संस्थाओं एवं क्षेत्रों से निवेदन है कि पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के नौ दिन में आयोजित कार्यक्रमों के संवाद संयुक्त रूप में भेजें, क्योंकि प्रतिदिन अलग-अलग भेजी गई न्यूज को प्रकाशित कर पाना संभव नहीं हो पाएगा। कृपया नौ दिन के पश्चात संयुक्त रूप में संवाद भेजें। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।
-कार्यकारी संपादक

ज्ञानशाला के बच्चों की विभिन्न ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएं

छोटी खाटु

साध्वी संघप्रभाजी के सान्निध्य में साप्ताहिक रात्रिकालीन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत ज्ञानशाला के बच्चों की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। साध्वी संघप्रभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा ऐसी प्रतियोगिताएं जहां बच्चों के ज्ञानवर्धन में सहायक बनती है, वहीं संस्कार परिष्कार एवं चिंतन के अविष्कार में उपयोगी होती है।

प्रतियोगिता के संचालन में साध्वी प्रांशुप्रभाजी ने मुख्य दायित्व निभाया, वहीं साध्वी प्रज्ञाप्रभा का पूरा सहयोग रहा। तेरापंथी सभा के तत्वाधान में आयोजित इस आयोजन के अंतर्गत क्रमशः 'शब्दावली प्रतियोगिता' 'मास्टर ऑफ माइंड', 'मेन ऑफ द मैच' एवं 'भिक्षु वन मिनिट' प्रतियोगिता में कुल सोलह प्रतियोगियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता निर्णायक के रूप में पदमचंद कोचर, मुकेश बैद, विकास सेठिया ने तथा टाइम मार्किंग में किशोर मंडल संयोजक प्रदीप व संख्या की गणना में कन्या मंडल संयोजिका गर्विता धारीवाल ने अहम भूमिका निभाई। विजेता प्रतियोगियों को तेरापंथी सभा एवं सभी संभागियों को उपासक अमरचंद चोरड़िया, अजमेर द्वारा प्रोत्साहित किया गया। उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने बच्चो के प्रस्तुतिकरण की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

तेयुप सदस्यों की असम के राज्यपाल से भेंट

गुवाहाटी

तेरापंथ युवक परिषद्, गुवाहाटी का एक प्रतिनिधिमंडल गत शनिवार को असम के राज्यपाल महामहिम गुलाबचंद कटारिया से मिला। इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के नेत्रदान सलाहकार एवं गुवाहाटी सभाध्यक्ष बजरंग सुराणा ने राज्यपाल महोदय को अभातेयुप द्वारा नेत्रदान के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अभातेयुप नेत्रदान एवं रक्तदान के क्षेत्र में भारतवर्ष में अग्रणी भूमिका निभा रही है। तेयुप अध्यक्ष जयंत सुराणा ने तेयुप की गति-प्रगति का प्रतिवेदन माननीय राज्यपाल महोदय को भेंट किया।

परिषद् द्वारा समाजसेवा के विभिन्न स्थायी प्रकल्पों आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल आदि अन्य गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर महामहिम ने नेत्रदान अभियान समर्थन पत्र भरते हुए कहा कि नेत्रदान से उन लोगों को ज्योति मिल सकेगी, जिन्हें इसकी आवश्यकता है। मैं नेत्रदान का समर्थन करता हूं। उन्होंने इस प्रयास के लिए अभातेयुप के प्रति अपनी मंगल भावना प्रकट की। प्रतिनिधि मंडल में तेरापंथी सभा के उपाध्यक्ष पवन जम्मड़, तेयुप नेत्रदान संयोजक सतीश भादानी, विनीत चिंडालिया तथा पिंकी सुराणा शामिल थे। मंत्री संदीप कुमार भादानी ने नेत्रदान समर्थन पत्र देने के लिए राज्यपाल महोदय का आभार ज्ञापन किया।

'द सिक्रेट ऑफ हेप्पी फैमिली' कार्यशाला

दिल्ली-शाहदरा

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में टीपीएफ दिल्ली एवं तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में ओसवाल भवन के प्रांगण में 'खुशहाल परिवार कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जिसमें अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने 'द सिक्रेट ऑफ हैप्पी फेमिली' पर सभा को संबोधित करते हुए कहा- 'परिवार समाज की वह महत्त्वपूर्ण ईकाई है, जहां एक ही छत के नीचे विभिन्न रुचि एवं सोच वाले व्यक्ति रहते हैं। परिवार वह बगीचा है, जहां सौहार्द, सामंजस्य, समता, ममता व आनंद के मनमोहक फूल खिलते हैं। उन फूलों की मोहक सुरभि से पूरा वातावरण सुवासित हो जाता है। हर व्यक्ति अपने परिवार को खुश एवं आनंददायी रखना चाहता है।' साध्वीश्री ने कहा- 'परिवार के सदस्यों की सोच पोजीटिव हो। पोजीटिव सोच वाला खुद भी खुश रहता है एवं दूसरों को भी खुश रख सकता है। परिवार के हर सदस्यों के मन में एक-दूसरों के प्रति प्रमोद भावना रहे। एक-दूसरे के गुणों का बखान करें। परिवार में मान-सम्मान के भाव रहे। परिवार के छोटे सदस्यों में विनम्रता एवं बड़ों में वात्सल्य भाव होना चाहिए। जहां विनय व वात्सल्य होता है, वहां आनन्द की सरिता प्रवाहित होती है। हर व्यक्ति परिवार का महत्व समझे एवं खुद भी खुश रहे एवं दूसरों को भी खुश रखने का प्रयत्न करे।

दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष रामनिवास गोयल ने साध्वीश्रीजी के प्रवचन श्रवण का लाभ लिया एवं अपने विचार प्रकट किए। साध्वी डॉ॰ सुधाप्रभाजी ने अपने भाव व्यक्त किए। टीपीएफ दिल्ली के अध्यक्ष राजेश गेलड़ा ने टीपीएफ का परिचय दिया। टीपीएफ मंत्री कविता बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया। मंगल संगान टीपीएफ के सक्रिय सदस्यों ने किया। कार्यशाला का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 सितम्बर - 10 सितम्बर 2023

✦ राग-द्वेष व्यक्ति की चेतना को मलिन बनाने में तत्त्व हैं। राग-द्वेष मुक्ति की अवस्था अध्यात्म की अवस्था है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से बढ़ती है बुद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

२१ अगस्त २०२३,
नंदनवन मुम्बई

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जिनवाणी की अमृत वर्षा कराते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में बताया गया है कि जीव और पुद्गल का एक संबंध होता है। जो शरीर दिखाई दे रहा है, वह पुद्गल है। जीव अमूर्त है। इस पोद्गलिक शरीर से भी ज्यादा निकट संबंध इस जीव का तेजस शरीर के साथ है और उससे भी ज्यादा निकट का संबंध कार्मण शरीर के साथ होता है।

सामान्यतया हर मनुष्य के पास तीन शरीर होते हैं। औदारिक, तेजस और कार्मण शरीर। इसके सिवाय दो शरीर वैक्रिय और आहारक भी होते हैं। वैक्रिय शरीर देवों और नेरयिकों में तो होता ही है, उनमें औदारिक शरीर नहीं होता। वैक्रिय शरीर से विक्रिया होता है। कोई-कोई मनुष्य तिर्यन्च वैक्रिय शरीर का प्रयोग कर सकता है। संसारी जीवों में तेजस और कार्मण, ये दो प्रकार तो रहते ही हैं, वायुकाय भी कभी-कभी वैक्रिय शरीर धारण कर सकता है। आहारक शरीर दुर्लभ सा है। जो केवल चौदह पूर्वधारी साधु में ही हो सकता है। कार्मण शरीर सब कुछ कराने वाला होता है।

गौतम स्वामी ने प्रश्न पूछा कि भंते! औत्पतिकी, वैनैयिकी, कार्मिकी और परिणामिकी- ये कितने वर्ण यावत् कितने स्पर्श वाली प्रज्ञप्त है। उत्तर दिया गया कि ये अवर्ण है, अगंध है, अरस है, अस्पर्श है। कर्म शरीर मूर्त है। माया-लोभ को पैदा करने वाला कार्मण शरीर है, इसलिए उसमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श होते हैं। जो चीज क्रम के अभाव से मिलती है, उसमें यह चारों नहीं होते हैं। बुद्धि कर्म के क्षयोपशम से मिलने वाली चीज है। ज्ञानावरणीय कर्म का सघन उदय होता है तो आदमी के पास ज्ञान की मन्दता हो जाती है। ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से बुद्धि बढ़ती है। अनेक रुपों में इसका क्षयोपशम हो सकता है।

जिनके पास अच्छी बुद्धि है, उसका उपयोग अच्छे कार्यों में करना चाहिये। बुद्धि के अनेक स्तर हो सकते हैं। बुद्धि आत्मा की चेतना से होने वाली स्थिति है, इसलिए यह अवर्ण-अस्पर्श वाली है।

पूज्यवर ने कालूयशोविलास का सरस शैली में विवेचन कराते हुए पूज्य कालूगणी द्वारा भविष्य की व्यवस्था कराने के प्रसंग को आगे बढ़ाया।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी ने फरमाया कि जहां व्यक्ति अकेला रहता है, वहां कोई कलह की संभावना नहीं रहती। जहां सामुदायिक जीवन होता है, व्यक्ति परिवार, समाज में रहता है, वहां कलह की स्थिति बन सकती है। गृहस्थों में कलह का मूल कारण जर, जोरू और जमीन बन सकती है। हम सभी कलह से बचने का प्रयास करें।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

फिट युवा हिट युवा हेल्थ क्लब का शुभारम्भ

नालासोपारा, मुंबई

अभातेयुप निर्देशित त्रिआयामी लक्ष्यों की ओर आगे बढ़ने के क्रम में तेरापंथ युवक परिषद, नालासोपारा द्वारा सेंट्रल पार्क ग्राउंड में जैन संस्कार विधि से फिट युवा हिट युवा हेल्थ क्लब का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में जैन संस्कारक पारस बाफना, रमेश ढालावत, अरविन्द धाकड़ द्वारा संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया गया।

इस अवसर पर सभा अध्यक्ष लक्ष्मीलाल मेहता, तेयुप नालासोपारा अध्यक्ष मुकेश मेहता ने उपस्थित सभी युवाओं का स्वागत किया। योगा प्रशिक्षक प्रकाश गुंदेचा, हिट युवा फिट युवा के संयोजक प्रकाश सोलंकी, सह संयोजक प्रसन्न चोरड़िया, उपाध्यक्ष अमित् मेहता, कोषाध्यक्ष चंद्रप्रकाश ढालावत व तेयुप की पूरी टीम एवं किशोर मंडल व आरएसएस के कार्यकर्ताओं और स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारीगण सहित युवाशक्ति की सराहनीय उपस्थिति रही।

कुशल संचालन एवं आभार ज्ञापन तेयुप के मंत्री जितेश हिरण ने किया।

गुलाबी नगरी में गूंजी भक्तिकाव्य भक्तामर स्तोत्र की मंत्र–ऋचाएं

अणुविभा, जयपुर

शासन गौरव साध्वी कनकश्रीजी का पावन सान्निध्य, अणुविभा केन्द्र, महाप्रज्ञ सभागार का विशाल प्रांगण, तेरापंथ महिला मंडल जयपुर (शहर) द्वारा आयोजित 'भक्तामर-अनुष्ठान' का उत्साह-उल्लासपूर्ण वातावरण। 'जैन प्रतीक' लोकाकाश के आकार में, साधना प्रायोग्य परिधान में १०८ जोड़े (दम्पति) तथा शताधिक आबाल-वृद्ध आराधक पंक्तिबद्ध आसीन थे, इससे परिषद् की सुषमा अनूठी प्रतीत हो रही थी।

अनुष्ठान के प्रारम्भ में साध्वी कनकश्रीजी ने विशाल धर्म परिषद् को संबोधित करते हुए कहा- 'भक्तामर स्तोत्र एक कालजयी भक्ति काव्य है। आचार्य मानतुंग सूरि की अखंड अर्हद भक्ति, अगाध आस्था और आध्यात्मिक असीम ऊर्जा का परिचायक है।' भक्तामर स्तोत्र को जन आस्था का केन्द्र बताते हुए साध्वीश्री ने कहा- 'देश-विदेश में रहने वाले लाखों जैन व जैनेत्तर लोग भक्तामर के माध्यम से आदिनाथ भगवान ऋषभदेव की आराधना करते हैं और जीवनगत अनेक जटिल समस्याओं का समाधान भी प्राप्त करते हैं।' साध्वीश्री ने श्रावक-श्राविकाओं को भक्तामर सीखने व नियमित स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी और शुद्ध उच्चारण का महत्व बताया।

साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में भक्तामर स्तोत्र के एक-एक काव्य के साथ विशिष्ट मंत्रों का संगान कर अनुष्ठान कराया तब ऐसा लगा मानों समूचा वातावरण पवित्रता के परमाणुओं से भर रहा है। कार्यक्रम की सफलता में तेरापंथ महिला मंडल, जयपुर की अध्यक्षा नीरू मेहता, मंत्री नीलिमा बैद सहित टीम की बहिनों तथा चंचल दूगड़, शैली बाफणा, सोनम कोठारी के कौशलपूर्ण श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

एक सलामी स्वतंत्रता सैनानियों के नाम

मुंबई

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में मुंबई तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में मुंबई कन्या मंडल ने स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में 'एक सलामी स्वतंत्रता सैनानियों के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में साध्वी दीप्तियशाजी ने कन्या मंडल को भारतीय सैनानियों के बलिदान का महत्त्व समझाया और हम उनके बलिदानों को कभी ना भूले यह भी बताया।

परम पूज्य आचार्य प्रवर के सान्निध्य में आयोजित इस कार्यक्रम के साथ ही मुम्बई में कन्याओं ने स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण किया एवं अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित कर उन बहादुर स्वतंत्रता सैनानियों और वीरों को श्रद्धांजलि अर्पित की, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन कुर्बान कर दिया। लगभग ३८१ कन्याओं की उत्साहवर्धक उपस्थिति रही।

मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा विमला कोठारी ने कन्याओं को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी और आजाद भारत की हर कन्या आध्यात्मिक आजादी को अपने जीवन का उद्देश्य बनाएं, इसके लिए प्रेरित किया। कन्याओं द्वारा देशभक्ति पर भाषण व गीत की प्रस्तुति दी गयी। कन्या मंडल प्रभारी मधु बाफना, सहसंयोजिका नेहा सोलंकी व निकिता चौहान का सराहनीय सहयोग रहा। संयोजिका काजल मादरेचा ने कार्यक्रम का संचालन किया। सहप्रभारी पूनम परमार ने आभार ज्ञापन किया।

विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान एवं मासखमण तप अभिनंदन

कृष्णानगर, दिल्ली

तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित विशेष आध्यात्मिक अनुष्ठान का आयोजन उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, कृष्णानगर में आयोजित किया गया। अनुष्ठान का शुभारंभ मुनिश्री के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। मुनिश्री ने इस अवसर पर लोगस्स, भक्तामर, उवसग्गहरं स्त्रोत व अनेक सिद्ध मंत्रों के जाप के साथ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करवाया। आत्मा सिद्धि और कर्म निर्जरा के लिए इस विशेष अनुष्ठान में करीब ४५० श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता दर्ज करवायी।

क्षेत्र में चल रही गुप्त तपस्या आज पवन जैन के मासखमण के रूप में सामने आयी। पवन जैन ने ३१वें दिन का मुनिश्री से प्रत्याख्यान किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के संदेश पत्र का वाचन सभा कोषाध्यक्ष मनदीप गोलछा ने किया। इंदौर से पधारे जैन युवक रत्न निलेश रांका, गांधीनगर तेरापंथी सभाध्यक्ष कमल गांधी, तेयुप दिल्ली अध्यक्ष विकास चौरड़िया एवं तपस्वी भाई अमित बोथरा ने सम्मान स्वरूप संदेश पत्र भेंट किया। परिवारजनों ने भी सुमधुर गीतिका द्वारा तपस्वी भाई की अनुमोदना की। श्रावक समाज ने बड़ी संख्या में उपवास, बेला, तेला आयम्बिल आदि का प्रत्याख्यान किया। तेयुप उपाध्यक्ष राकेश बैंगाणी, अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य जतन श्यामसुखा आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। गांधीनगर क्षेत्रीय संयोजक मिलन बोथरा ने आभार ज्ञापन किया।

भगवान ऋषभ की पावन स्तुति है भक्तामर अनुष्ठान

रायपुर

तेरापंथ अमोलक भवन, सदर बाजार में समणी निर्देशिका डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी के सान्निध्य में भगवान ऋषभदेव की स्तुति के रूप में भक्तामर के भव्य अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ महिला मंडल, रायपुर द्वारा किया गया। मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। करीब ४५ जोड़ों ने अनुष्ठान में भाग लिया।

समणी डॉ. ज्योतिप्रज्ञाजी ने बहुत ही सुंदर गीतिका प्रस्तुत करते हुए एक एक्टिविटी के द्वारा दंपत्तियों को यह समझाया कि जिस प्रकार रिंग फिंगर आपस में जब विशेष आकृति में मिलती है तो अलग करना काफी मुश्किल होता है। इसी प्रकार आप जोड़ियां को भी आपस में बहुत ही प्यार और समन्वय के साथ रहना चाहिए। समणी डॉ. मानसप्रज्ञाजी ने कहा कि दंपत्तियों को आपसी व्यवहार में अंग्रेजी के तीन 'एल' का यूज ज्यादा करना चाहिए। लिसन, लव एंड लॉफ, जिससे उनका दांपत्य जीवन सुखमय बन सकेगा।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि फ्युचर एंड माइंडसेट एक्सपर्ट एंड स्पीकर रोहित राज का वक्तव्य विशेष आकर्षक रहा, जिन्होंने बहुत ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से 'हाऊ टू एचिव योर गोल' विषय पर लोगों को मार्गदर्शन दिया। सभी प्रतिभागियों के लिए एक गेम 'जोड़ी मिलाओ' भी रखा गया था। स्वागत उद्बोधन अध्यक्ष नेहा जैन, आभार मंत्री मधुर बच्छावत, संचालन प्रतिभा पोखरना ने किया।

समत्व के अभ्यास से वीतरागता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। वीतरागता ही साधना का लक्ष्य होना चाहिए।
-आचार्यश्री महाश्रमण

'लघुता से प्रभुता' तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का 16वां राष्ट्रीय अधिवेशन मुम्बई में आयोजित

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का १६वां राष्ट्रीय अधिवेशन तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता आचार्य महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। देशभर से ६० क्षेत्रों से लगभग ६३३ सदस्यों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रथम सत्र में टीपीएफ आध्यात्मिक पर्यवेक्षक डॉ० मुनि रजनीशकुमारजी के सान्निध्य में खुला सत्र रखा गया, जिसमें प्रतिभागियों ने मुनिप्रवर से सीधा संवाद कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। मुनिश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा हमारा मैनपॉवर मजबूत हो, उसके लिए सदस्यों की संख्या बढ़े, उस हेतु जहां-जहां प्रोफेशनल है, हम उनके घर पहुंचे तथा टीपीएफ की जानकारी दें, उन्हें संस्था से जोड़ें। हमारी आध्यात्मिक गतिविधियां बढ़ाएं। सत्र का संचालन नवीन चोरड़िया तथा आभार ज्ञापन मुकेश सिंघवी ने किया।

द्वितीय सत्र में 'एम आई लिविंग मॉय लाइफ?' विषय पर साध्वी वीरप्रभाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि- ड्रीम रखना बुरा नहीं है, लेकिन इसमें ये देखना है कि क्या मैं अपनी लाईफ को पूरी तरह से जी रहा हूं। उन्होनें पर्सनल लाईफ, प्रोफेशनल लाईफ, सोश्यिल लाईफ, फैमिली लाईफ- ये चार प्रकार की लाईफ का वर्णन करते हुए सभी के सामंजस्य की बात समझायी। सत्र संचालन सपना गोलेच्छा एवं आभार ज्ञापन पूर्वी जैन ने किया।

तृतीय सत्र में 'द इंडिया स्टोरी एंड अपॉरच्युनिटीज एंड चैलेंजेज ऑफ इंडियाज् इकोनॉमी' विषय पर वक्ता नवीन मुणोत ने बताया कि विश्व के इतिहास में किसी ने इस तरह से प्रगति नहीं की है, जिस तरह से भारत प्रगति करने वाला है। उन्होंने भारतीय अर्थशास्त्र की महत्ता को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया। अंत में संभागियों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। सत्र संचालन मनोज नाहटा एवं आभार ज्ञापन ऋषभ दूगड़ ने किया।

चतुर्थ सत्र में 'कौन बनेगा ज्ञानपति' क्विज कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया। संचालन चिराग पामेचा ने किया। प्रथम स्थान नॉर्थ जॉन से उज्ज्वल जैन तथा हेमा जैन ने प्राप्त किया। ईस्ट जोन से आलोक चौपड़ा एवं प्रतीक दुगड़ ने प्राप्त किया। सभी को साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन हिम्मत मांडोत द्वारा किया गया। शनिवार सायंकालीन सामायिक क्रम रखा गया, जिसमें देशभर से आए प्रोफेशनल सदस्यों ने गुरु सन्निधि में सामायिक की।

रात्रिकालीन कार्यक्रम में 'टीपीएफ की अदालत' कार्यक्रम रखा गया, जो बहुत ही रोमांचित और सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया। सत्र संचालन तथा आभार ज्ञापन टीपीएफ मुंबई अध्यक्ष राज सिंघवी ने किया।

द्वितीय दिवस के शुरूआत में प्रवचन पंडाल में प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ द्वारा प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया गया। प्रथम सत्र में 'मेजिकल मिलेट्स फ्रीडम फ्रॉम ऑल डिजिज' विषय पर शर्मिला ओसवाल, मिलेट् वुमन ऑफ इंडिया ने टीपीएफ के बीच अपनी खुशी व्यक्त करते हुए अपनी सफलता की कहानी बयान की। घूंघट से हॉवर्ड का सफर तय करने की राह को साझा करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी सदा उनके प्रेरणास्रोत रहे। सत्र का संचालन स्नेहा मेहता तथा आभार ज्ञापन नीरज मोटावत ने किया।

टीपीएफ गौरव जयचंद लाल मालू ने दायित्व बोध करवाया तथा टीपीएफ के नये सदस्यों से आह्वान किया कि टीपीएफ की गतिविधियों में अपनी भागीदारी निभाये। अपने समय का विजर्सन कर संस्था के विकास में अपना श्रम नियोजित करें।

द्वितीय सत्र 'रोल ऑफ प्रोफेशनल्स इन इंडियाज् ग्रोथ स्टोरी' विषय पर डिजिटल मोड में नितिन गडकरी, केन्द्रीय मंत्री, सड़क, परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय ने १६वें राष्ट्रीय अधिवेशन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि टीपीएफ द्वारा शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य किया जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में संस्कारों के आधार पर अच्छे व्यक्ति के निर्माण में सहयोगी बन सकते हैं। सोश्यिल इकोनॉमिक ट्रांसफॉर्मेशन, यह हमारे देश के लिए, हमारे समाज के लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता है।

मुझे इस बात की खुशी है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने राष्ट्रीय उत्थान एवं जनकल्याण के लिए ५५ हजार किमी यात्रा कर समाज में नैतिकता और सद्भावना का बोध दिया है। तेरापंथ समाज द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए जो कार्य हो रहे हैं, वह भारत के निर्माण में अतुल्य साबित होने वाले हैं। सत्र का संचालन नवीन पारख तथा आभार ज्ञापन निर्मल कोटेचा ने किया।

तृतीय सत्र नेटवर्किंग सत्र रखा गया, जिसमें अधिवेशन के संभागियों ने आपस में अपनी बिजनेस प्रोफाइल का आदान-प्रदान किया। संचालन नीरज मोटावत ने किया।

चतुर्थ सत्र 'चाणक्य नीति फॉर वेल्थ क्रिएशन एंड स्प्रिच्युल एनलाइटमेंट' विषय पर कॉर्पोरेट चाणक्य डॉ० राधाकृष्णा पिल्लई ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि कितने ही प्रोफेशनल हो जाओ, पर सदा अपनी जड़ों से अपने अध्यात्म से जुड़े रहना। पीढ़ियां भले ही बदले पर सिद्धांत न बदले। प्रश्नोत्तर के माध्यम से उन्होंने चाणक्य नीति के साथ-साथ अध्यात्म नीति को जोड़ने हेतु प्रेरित किया। सत्र का संचालन राजेश भूतोड़िया तथा आभार ज्ञापन राहुल डांगी ने किया।

मुनि अभिजितकुमारजी ने अपने वक्तव्य में प्रोफेशनल्स एवं आज की युवा पीढ़ी को ड्रिंक, ड्रग और पाश्चात्य संस्कृति से बचाने की प्रेरणा दी। अपने प्रोफेशन की कोर वेल्यू को संरक्षित कर अपने जीवन में आगे बढ़ने को कहा।

पंचम सत्र में 'हॉउ स्प्रिच्युलिटी केन बी रिलेटेड टू प्रॉफेशनल ग्रोथ' विषय पर मुनि कुमारश्रमणजी ने प्रेरक उद्बोधन देते हुए फरमाया कि किसी भी सफलतम पुरुष की जीवनी देखेंगे तो पायेंगे कि उन्होनें हर क्षेत्र में तालमेल बिठाते हुए प्रगति की। घर-परिवार, समाज, सभा-संस्था, जीवन और बिजनेस का लक्ष्य साधा और समय प्रबंधन के साथ पूर्ण किया। संचालन मोहित बैद तथा आभार ज्ञापन के०एल० परमार ने किया।

अंतिम सत्र में संस्था द्वारा वर्ष भर किये गये अच्छे कार्यों के लिए शाखाओं एवं कार्यकताओं का मूल्यांकन करते हुए सम्मानित किया गया।

टीपीएफ अचिवर्स अवार्ड के अंतर्गत मनीष मुणोत, डॉ० गौतम भंसाली, विजय चौरड़िया, जय जीतमल चोरड़िया, राजकुमार नाहटा, सुनील सिंघी, डॉ० अजय मुरड़िया, विनीत बैद, राहुल बोथरा, आनन्द बागरेचा, डॉ० धवल डोसी, मनीष दुगड़ को सम्मानित किया गया।

सत्र का संचालन नवीन चोरड़िया, छवि बैंगानी एवं आभार ज्ञापन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोज नाहटा ने किया। अधिवेशन को सफल बनाने में पूरी मुम्बई टीम तथा तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कैम्प ऑफिस टीम का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रथम पृष्ठ का शेष ...

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम...

एक अल्प गुणी भी गुरु प्रसाद से ऊँचाई को छू सकता है, इसका साक्षात् उदाहरण मैं स्वयं हूं।

महामहिम राज्यपाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि चातुर्मास श्रवण, मनन, इतिहास, आत्म साक्षात्कार को जानने का अवसर है। आचार्यश्री एक संगठन के आचार्य होने के बावजूद धर्म निरपेक्ष विचारों के धनी हैं, जो जनमानस को जागृत कर रहे हैं। आप नशामुक्ति, नैतिकता और सद्भावना का संदेश देते हुए एक राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत सभ्यता, समृद्धि और संस्कृति से भरा राष्ट्र है और महाराष्ट्र तो संतों की भूमि है। आत्मज्ञान की परंपरा में भगवान महावीर के सिद्धांतों का प्रमुख स्थान है, जो अध्यात्म उत्थान कर रहा है। आचार्य तुलसी ने इसी राह पर अणुव्रत के ध्वज तले अपनी आवाज समाज हेतु बुलंद की।

राज्यपाल महोदय ने कविता के माध्यम से सबका मनोबल बढ़ाया एवं आत्म-विकास हेतु संकल्पों की क्षमता पर विशेष जोर देते हुए कहा कि प्रोफेशनल के पास बाल-अबाल, गरीब, गांव, आदिवासी आदि को सबल बनाने हेतु विशेष क्षमता है। अपने भीतर जगी करूणा से आप लघुता से प्रभुता पा सकते हैं। टीपीएफ अपने आप में अच्छा संगठन है जो शिक्षा, चिकित्सा और आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्यरत है। मंचीय कार्यक्रम राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुआ।

पूज्यवर ने उत्तम पितलिया को सिद्धि तप, खुशबू चिंडालिया को ५७ की तपस्या, करण कोठारी को ३० की तपस्या, शीतल मेहता को २६ की तपस्या, मधु कोठारी को २६ की तपस्या, पुष्पा मेहता को वर्षीतप में अठाई के प्रत्याख्यान करवाये एवं अन्य तपस्वियों को भी उनकी तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये गये।

डॉ० विजयलक्ष्मी मणोत की कृति 'सृजन सुख' परम पूज्य की सन्निधि में लोकार्पित की गई। पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाया। पूज्यवर ने उपस्थित लोगों को प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया।

आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़ ने अपने उद्गार प्रस्तुत किये। महामहिल राज्यपाल श्री रमेश बैंस का सम्मान तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम और आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति मुंबई द्वारा सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

टीपीएफ शाखा मूल्यांकन सारणी

कैटगरी ब्रांच 'ए'	प्रथम- फरीदाबाद	द्वितीय- विशाखापटट्नम	तृतीय-पुणे
कैटगरी ब्रांच 'बी'	प्रथम-रायपुर	द्वितीय-कोलकाता जनरल	तृतीय-राजसमंद
कैटगरी ब्रांच 'सी'	प्रथम-कोलकाता साउथ	द्वितीय-जयपुर	तृतीय-अहमदाबाद
कैटगरी ब्रांच 'डी'	प्रथम-मुंबई और दिल्ली	द्वितीय-बैंगलोर	
कैटगरी यूनिट	प्रथम-हासन	द्वितीय-सैंथिया	तृतीय-टोहाना
बेस्ट जोन	प्रथम-वेस्ट जोन	द्वितीय-साउथ जोन	तृतीय-नॉर्थ जोन

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
04 सितम्बर - 10 सितम्बर 2023

✦ मर्यादा हमारा रक्षा कवच है, शरण, त्राण व प्राण है। संघ व संघपति के प्रति आस्था का भाव बनाएं रखें।
-आचार्यश्री महाश्रमण

कलहमुक्त और संस्कारयुक्त परिवार बनाएं बेटियां : आचार्यश्री महाश्रमण

महासभा द्वारा आयोजित 'बेटी तेरापंथ की' सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर तेरापंथी बेटियों को मंगल पाथेय प्रदान कराते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

२० अगस्त २०२३, नंदनवन

तीर्थंकर के प्रतिनिधि महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि भगवती सूत्र में प्रश्नोत्तर का क्रम भी काफी चलता है। प्रश्नोत्तर के क्रम में बताया गया कि हमारी यह दुनिया वैसे आकाश में स्थित है। जैन दर्शन के अनुसार आकाश अनन्त है, एक प्रकार है। आकाश का आदि या अंत नहीं होता। आकाश का कोई ओर छोर नहीं होता। आकाश के दो भाग बताये गये हैं- लोकाकाश और अलोकाकाश। सम्पूर्ण आकाश में छोटा-सा लोकाकाश है। अलोकाकाश में कोई प्राणी नहीं होता न कोई पुद्गलात्मक चीज और न धर्मा-स्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि द्रव्य होता है। केवल वहां आकाश द्रव्य है।

इस छोटे से लोकाकाश में हमारी सारी दुनिया है। सारे के सारे जीव निकाय इस लोकाकाश में है। मोक्ष में विराजमान सिद्ध आत्माएं भी इसी लोकाकाश में है। धर्मास्तिकाय आदि छः द्रव्य इसी लोकाकाश में है। धर्मास्तिकाय हमारे हलन-चलन में अमूर्त रूप से सहायता करने वाला द्रव्य है। अधर्मास्तिकाय का कार्य है, गतिनिरोध- स्थिरता में सहयोग देना। आकाश ठहरने के लिये स्थान देता है। काल का कार्य है- वर्तना-बीतना।

पुद्गलास्तिकाय जो भी हमें दिखाई देता है, वह पुद्गल है। इनमें कुछ तो दिखाई देते है, कुछ दिखाई नहीं देते, पर है, वे मूर्त। हम लोग जितने प्राणी हैं, वह सब जीवास्तिकाय है। सारे जीव लोकाकाश में ही है। यह पूरी दुनिया षडद्रव्यात्मक है। छः द्रव्यों में पांच अमूर्त है, केवल पुद्गला- स्तिकाय ही मूर्त है, रूपी है।

जीव और पुद्गल का भी संबंध है, जो आत्माएं मोक्ष में चली गई, वे तो अमूर्त है, पर हमारी आत्मा पुद्गल से प्रभावित है, पूर्णतया स्वच्छ नहीं है। जीव के प्रभाव से पुद्गल में और पुद्गल के प्रभाव से जीव मे परिवर्तन होता है।

पुद्गल वह होता है, जिसमें स्पर्श, रस, गंध और वर्ण भी होती है। कर्म चतुस्पर्शी होते हैं। कर्म मूर्त है, वो हमारी अमूर्त आत्मा के साथ धुले मिले हुए है। इस कारण संसार भ्रमण होता है। सिद्धों की आत्मा तो पूर्णतया अमूर्त है, पर संसारी जीवों की आत्मा कर्मों से धुली हुई है, इन कर्मों से ही कर्म बंधते है। विशुद्ध आत्मा के कर्मों का बंध हो भी नहीं सकता। कोई आदमी अपने जीवन में माया-धोखाधड़ी करता है तो पापचार में प्रवृत्त हो जाता है। माया आत्मा को पाप कर्मों का बंध कराने वाली होती है। वर्तमान में संसारी आत्मा कर्मों से बंधी हुई होती है। आदमी माया का व्यवहार करता है। आदमी इसी माया के कारण व्यापार, व्यवहार, समाज आदि में धोखाधड़ी करता है। माया हमारे जीवन में न रहे या इसका अल्पीकरण हो जाये। माया से झूठ का संबंध होता है। सच्चाई और सरलता का रास्ता सीधा सपाट है। माया का रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा है। गृहस्थ भी सदाचार का जीवन जीये। माया से विश्वसनीयता चली जाती है। कहीं झूठ बोलकर किसी को फंसा देना, झूठ बोलकर किसी का धन हड़प लेना, यह सबकुछ मायाचार होता है। झूठ, चोरी, छल, कपट और धोखाधड़ी से कमाया हुआ पैसा अशुद्ध होता है तथा न्याय नीति और श्रम से कमाया हुआ धन शुद्ध होता है। इसलिए आदमी को अपने जीवन में मायाचार से बचने और जीवन में सरलता, ऋजुता, सच्चाई, ईमानदारी और प्रमाणिकता जैसे सद्गुणों का विकास करने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यवर के पचासवें दीक्षा कल्याणक अवसर पर सुरेश तातेड़ ने ५१ की तपस्या का प्रत्याख्यान परम पावन से ग्रहण किया। अन्य तपस्वियों ने भी अपनी तपस्याओं के प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किये।

साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि हमारे मन में शांति हो तो हम जीवन के अनेक रहस्यों को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए हमे भीतर के जगत में प्रवेश करना होगा। जो व्यक्ति आत्मा के स्तर पर जीना सीख लेता है, वह व्यक्ति हमेशा आनंद की अनुभूति करता है। हम प्रतिक्रिया मुक्ति का जीवन जीयें।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आयोजित 'बेटी तेरापंथ की' सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर कच्छ-भुज से संभागी बेटियों व मध्यप्रदेश से समागत बेटियों ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। इस संदर्भ में आचार्यश्री ने आर्शीवचन प्रदान करते हुए फरमाया कि तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में द्विदिवसीय अच्छा कार्यक्रम चला। बेटियां जहां भी रहें अपने जीवन में अहिंसा, संयम और तप के प्रभाव को बनाए रखें। जहां तक संभव हो, दूसरों को भी धार्मिक-आध्यात्मिक सहयोग दें। अपने परिवार को कलहमुक्त और संस्कार से युक्त बनाने का प्रयास करें। प्रीति कोठारी ने स्वलिखित पुस्तक 'मां, पिता व गुरु' को पूज्यचरणों में लोकार्पित करते हुए अपनी भावनाएं व्यक्त की। पूज्यवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करवाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी की महत्वपूर्ण भेंट

राष्ट्रपति महोदया से वार्तालाप करते हुए मुनिश्री कमलकुमार एवं राज्य सभा सांसद लहरसिंह सिरोया

नई दिल्ली

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी की भेंट हुई। मुनिश्री ने जब परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का पावन संदेश महामहिम को सुनाया, तब राष्ट्रपति महोदया ने दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर गुरुदेव को प्रणाम किया और प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी महान आत्मा हैं, पुण्यात्मा हैं। मैं पूर्व में उनके दर्शन कर चुकी हूं।

मुनिश्री ने महामहिम को आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव, अणुव्रत अमृत महोत्सव, जीवन विज्ञान, आचार्यश्री महाश्रमणजी की अणुव्रत यात्रा, मुंबई चातुर्मास आदि अनेक विषयों पर अवगति प्रदान की। लगभग १८ मिनट तक चली उस भेंट वार्ता में राष्ट्रपति महोदया को राज्य सभा सांसद लहरसिंह सिरोया ने 'तुलसी स्मृति ग्रंथ' भेंट कर सम्मान किया। महामहिम के समक्ष जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया व अणुव्रत विश्व भारती की संगठन मन्त्री डॉ॰ कुसुम लुणिया ने अपनी भावनाएं व्यक्त की। मुनि अमनकुमारजी भी वहां उपस्थित रहे। मुनिश्री की इस भेंट वार्ता में टीकमचंद सेठिया, बाबूलाल दूगड़ एवं डॉ. धनपत लुणिया का विशेष श्रम रहा। गाँधीनगर सभा एवं तेयुप दिल्ली द्वारा रास्ते की सेवा में श्रम नियोजित किया गया। इस कार्यक्रम से जिन शासन एवं तेरापंथ धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई।

तेरापंथ किशोर मंडल का नाम हुआ एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में नंदनवन, मुंबई में आयोजित तेरापंथ किशोर मंडल के राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर तेरापंथ किशोर मंडल ने एक नव इतिहास का सृजन किया। प्रातः ४:०० बजे लगभग ११०० से अधिक किशोरों ने लगभग ३ घंटे की कड़ी मेहनत के साथ दुनिया का सबसे विशालतम ह्युमन जैन फ्लैग बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। तेरापंथ किशोर मंडल की इस उपलब्धि के लिये उसका नाम एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ। यह जैन ध्वज ११०० वर्गफुट से अधिक के क्षेत्र में बनाया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**